

इस प्रश्नपत्र में से कम या ज्यादा मात्रा में प्रश्न दिनांक ४ मार्च, २०१२ को होनेवाली मुख्य परीक्षा में भी पूछे जाने की संभावना है ।

बोचासणवासी श्री अक्षरपुरुषोत्तम स्वामिनारायण संस्था  
सत्संग शिक्षण परीक्षा

पूर्व कसौटी : सत्संग परिचय : प्रश्नपत्र - १

जनवरी, २०१२

समय : सुबह ९.०० से ११.१५

कुल गुणांक : ७५



अनुपस्थित परीक्षार्थी की उत्तर पुस्तिका का केवल यही पृष्ठ वापस भेजना है ।

परीक्षार्थी के नाम सम्बंधित विवरण के साथ 'बारकोड' अंकित किया गया है । कृपया उस पर किसी प्रकार का नुकसान मत कीजिए ।

अनिवार्य : निम्न लिखित सूचना की परीक्षार्थी को अपने आप पूर्ति करनी है

दिनांक                      महीना                      वर्ष

परीक्षार्थी का जन्म दिन   

परीक्षार्थी का अभ्यास .....

परीक्षार्थी की उत्तर पुस्तिका पर अंकित नाम सहित अनिवार्य विवरण की सत्यता की जाँच करने के पश्चात् वर्ग निरीक्षक हस्ताक्षर करें ।

वर्ग निरीक्षक के हस्ताक्षर .....

परीक्षार्थीओं को महत्वपूर्ण सूचनाएँ :-

- मुख्य परीक्षा के दिन वर्गाखंड में उपस्थित प्रत्येक परीक्षार्थी वर्ग निरीक्षक से अपनी नामयुक्त उत्तर पुस्तिका के मुख्य पृष्ठ पर निर्दिष्ट स्थान पर वर्ग निरीक्षक के हस्ताक्षर करा लें ।
- बिना वर्ग निरीक्षक के हस्ताक्षर की उत्तर पुस्तिका मान्य नहीं होगी ।
- दायीं ओर दिए गए अंक प्रद्वन के गुण दर्शाते हैं ।
- सूचनानुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए । अस्पष्ट उत्तर अमान्य होंगे ।
- मुख्य परीक्षा में उत्तरवही के ईलावा अतिरिक्त पनों में लिखे हुए उत्तर मान्य नहि होंगे ।
- परीक्षार्थी केवल ब्लू या केवल काली स्याही वाली पेन से ही उत्तर पुस्तिका में उत्तर लिखे । पेन्सिल से अथवा लाल, हरी या अन्य स्याही से लिखे गए उत्तर या एक से ज्यादा स्याही से लिखि गई उत्तर पुस्तिका मान्य नहीं होगी ।
- परीक्षा कार्यालय, अहमदाबाद की पूर्व मंजूरी बिना मूल परीक्षार्थी के बदले 'लेखाकार' या 'डमी राईटर' एवं 'दूसरे व्यक्ति' द्वारा लिखी गई परीक्षा की उत्तरवही रद गीनी जाएगी । एक से ज्यादा प्रकार के अक्षरों की लिखावट रद मानी जाएगी ।
- परीक्षा खंड के बाहर और अन्य सभी परीक्षार्थीओं से अलग या परीक्षा के नियमों का उल्लंघन कर के दी गई परीक्षा मान्य नहीं होगी ।

मोडरेशन कार्यालय के लिए	प्रश्न नंबर ( गुण )	प्राप्तांक
	१ (९)	
	२ (६)	
	३ (५)	
	४ (५)	
	५ (४)	
	६ (४)	

विभाग-१, कुल गुण ( ३३ )

मोडरेशन कार्यालय के लिए	प्रश्न नंबर ( गुण )	प्राप्तांक
	७ (९)	
	८ (४)	
	९ (५)	
	१० (४)	
	११ (६)	
	१२ (४)	

विभाग-२, कुल गुण ( ३२ )

मोडरेशन कार्यालय के लिए	प्रश्न नंबर ( गुण )	प्राप्तांक
	१३ (१०)	

विभाग-३, कुल गुण

परीक्षक के हस्ताक्षर

मोडरेशन विभाग भाटे ५

गुण शब्दोंमां .....  
चेकर - नाम

विभाग - १ : सहजानन्द चरित्र - द्वितीय संस्करण, मार्च - २००९

प्र. १ निम्नलिखित कथन कौन, किसको और कब कहता है, यह लिखिए । ( ९ )

१. "इस वर्ष बाजरे की फ़सल बहुत अच्छी हुई है । कटाई का समय हो गया है ।"

कौन कहता है ? ..... किसको कहता है ? .....

कब कहता है ? .....

२. "आप इसी समय गढ़डा के लिए प्रस्थान करें । श्रीहरि ने आपको शीघ्र बुलाया है ।"

३. "आज मेरा शरीर अस्वस्थ है, मुझे आराम के लिए कोई एकान्त स्थान हो तो कहो ।"

प्र. २ निम्नलिखित कथनों के बारे में कारण लिखिए । ( दो से तीन पंक्ति में ) ( ६ )

१. जूनागढ़ मन्दिर के लिए सोच-विचार कर महन्त की नियुक्ति कीजिएगा ।

.....

.....

.....

२. महाराज के हरिभक्तों ने विवाह में गीत गाना बंद करवा दिया ।

३. वांढिया गाँव जाते समय मुकुन्द ब्रह्मचारी बैल-गाड़ी में नहीं बैठे ।

प्र. ३ निम्नलिखित किन्हीं एक प्रसंग के बारे में १५ पंक्ति में टूकनोंध लिखिए । ( वर्णनात्मक ) ( ५ )

१. बालहत्या बन्द करवाई ।

२. प्रतिज्ञा लिखाई ।

३. शूद्रों को द्विजत्व दिया ।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

प्र. ४ निम्नलिखित प्रश्नों के एक (संपूर्ण) वाक्य में उत्तर लिखिए । (५)

१. महाराज के समय में किसकी उपासना का युग था ?

.....  
.....

२. मेहमदाबाद में भगुजी ने किसको मार दिया ?

३. मगनीराम की क्या अभिलाषा थी ?

४. वेदान्ताचार्य का गर्व चूर चूर क्यों हो गया ?

५. महाराज के कौन से कार्य से उच्च वर्ण के लोग दुर्भाव रखने लगे ?

प्र. ५ निम्नलिखित विकल्पों में से केवल सही विकल्प के आगे दिए गए खाने में सही (✓) का निशान करें । (४)

सूचना : एक या एक से अधिक विकल्प सही हो सकते हैं । सभी सही विकल्प के आगे ही सही का निशान किया होगा तभी पूर्ण गुण दिए जायेंगे, अन्यथा एक भी गुण नहीं दिया जाएगा ।

१. श्रीजीमहाराज ने बनवाये हुए मन्दिर

(१)  गढ़डा

(२)  गोंडल

(३)  सारंगपुर

(४)  जूनागढ़

२. श्रीजीमहाराज के प्राकट्य के हेतु

(१)  अपनी सर्वोपरि उपासना का प्रचार ।

(२)  धर्म-भक्ति को मूर्ति का सुख देने के लिए ।

(३)  परमहंसों को दीक्षा देने के लिए ।

(४)  एकान्तिक धर्म की प्रवृत्ति ।

प्र. ६ निम्नलिखित वाक्यों में रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए । (४)

१. .... गाँव में महाराज ने बछेरे की आदत छुडवाई ।

२. इच्छारामभाई की पत्नी का नाम ..... था ।

३. महाराज ने ..... से कुरान बुलवाई ।

४. महाराज ..... साध्य है ।

विभाग - २ : सत्संग वाचनमाला भाग - २ - प्रथम संस्करण, जुलै - २०००

प्र. ७ निम्नलिखित कथन कौन, किसको और कब कहता है, यह लिखिए । (९)

१. "तुम तो पूर्वजन्म के संस्कारी मुक्त हो ।"

कौन कहता है ? ..... किसको कहता है ? .....

कब कहता है ? .....

.....  
.....

२. "तुम्हें क्या हो गया था ?"

३. "भगवान स्वामिनारायण तुम्हारा व्यवहार चलाएँगे ।"

प्र. ८ निम्नलिखित वाक्यों के बारे में कारण लिखिए । (दो से तीन पंक्ति में) (४)

१. प्रेमानंद स्वामी ने महाराज के सर्वोपरि स्वरूप दर्शाते हुए चार पदों की रचना की ।

.....  
.....

.....  
.....

२. आचार्य महाराज के लिए नमक और चीनी समान थे ।



प्र.१२ निम्नलिखित गलत वाक्य को उसके विषय के अनुलक्ष्य में सही लिखिए । ( ४ )

सूचना :- संपूर्ण वाक्य सही लिखा होगा तो ही गुण प्राप्त होंगे, अन्यथा एक भी गुण प्राप्त नहीं होगा ।

उदाहरण : विद्यावारिधि सद्गुरु श्री नित्यानन्द स्वामी : सन् १८७२ में मार्गशीर्ष शुक्ला नवमी की रात को नित्यानन्द स्वामी ने अहमदाबाद में आचार्यश्री अयोध्याप्रसादजी महाराज, गुणातीतानन्द स्वामी, परमचैत्यानन्द स्वामी, कृपानन्दजी के दर्शन करते - करते कारण देह का त्याग किया ।

उत्तर : विद्यावारिधि सद्गुरु श्री नित्यानन्द स्वामी : सवत १९०८ मार्गशीर्ष शुक्ला अष्टमी के दिन नित्यानन्द स्वामी ने आचार्यश्री रघुवीरजी महाराज, गोपालानन्द स्वामी, शुकमुनि, शून्यातीतानन्दजी आदि सन्तों के देखते - देखते उन्होंने अपनी नश्वर देह वरताल में छोड़ दी ।

१. भक्तरत्न लाडूबा : दोनों बहनों के एकसाथ काम करने में खींचतान होती है। इसलिए शुक्ल पक्ष के उत्सवों की व्यवस्था लाडूबा करे और कृष्ण पक्ष के उत्सवों की व्यवस्था जीवुबा करे ।

उ. ....

२. सद्गुरु नित्यानन्द स्वामी : अहमदाबाद के आचार्य की औपचारिक अनुमति के बिना प्रेमानन्द स्वामी को अहमदाबाद शास्त्रार्थ में भाग लेना सम्भव नहीं था ।

३. स्वामी जागा भक्त : जागाभक्त ने आचार्यश्री विहारीलालजी महाराज को सन्देशा भिजवाया : आप यदि लक्ष्मीनारायण की युगल मूर्ति को स्थापित करें और महाराज की महिमा का गान करनेवाला ग्रन्थ बनायें तो महाराज आपको दो महापुरुष जैसे पुत्र देंगे ।

४. भक्तराज दादाखाचर : नौकरी कहीं और करो इससे तो अच्छा यही हैं कि तुम गाँव में रहो और अपने भक्तों के कार्यों काप्रबन्ध करो ।

विभाग - ३ : निबंध

प्र.१३ निम्नलिखित किसी एक विषय पर करीब ३० पंक्ति में निबंध लिखिए । ( १० )

१. फास्ट फुड की स्पर्धा : अनेक बिमारियों को निमंत्रण ।  
(स्वामिनारायण प्रकाश (गुजराती) सितम्बर-२००९, पा. नं. २४ से २९)

२. आदिवासी उत्थान की गंगोत्री : प्रमुखस्वामी महाराज ।  
(स्वामिनारायण प्रकाश (गुजराती) मई, जून - २०११, पा. नं. ३० से ३८)

३. क्रोध की ज्वालाओं से कोषों दूर : योगीजी महाराज ।  
(स्वामिनारायण प्रकाश (गुजराती) जून-२००९, पा. नं. ७ से १३, ३६)

( ) .....

आगे के पृष्ठों में निबंध (गुजराती भाषामें) दर्शाए गए हैं ।



આગામી વર્ષે ૪ માર્ચ, ૨૦૧૨ના રોજ લેવાનાર મુખ્ય પરીક્ષાની પૂર્વતૈયારી માટે મુકાતા **પ્રી-ટેસ્ટના સંપૂર્ણ પ્રશ્નપત્રો હંમેશ મુજબ જાન્યુઆરીમાં (1<sup>st</sup> January, 2012ના રોજ) મુકાશે.** નિબંધ એ સામાન્ય જ્ઞાન સહિત મુક્ત વિષય હોય છે, જે અભ્યાસક્રમના પુસ્તકોમાંથી પૂછાતા નથી. આથી પરીક્ષાર્થીઓ નિબંધની તૈયારી સારી રીતે કરી શકે તે હેતુસર આપણે વહેલાસર ફક્ત તે યાદી આપની સમક્ષ મૂકી છે.

### પ્રી-ટેસ્ટના નિબંધોની યાદી

પરીચય : ૧ :

૧. ફાસ્ટ ફુડની સ્પર્ધા : અનેક બિમારીઓને નિમંત્રણ (સ્વામિનારાયણ પ્રકાશ - સપ્ટેમ્બર - ૨૦૦૮, પા.નં. ૨૪ થી ૨૯)
૨. આદિવાસી ઉત્થાનની ગંગોત્રી : બી.એ.પી.એસ. (સ્વામિનારાયણ પ્રકાશ - મે, જૂન - ૨૦૧૧, ૩૦થી૩૮)
૩. ક્રોધની જવાબાઓથી જોજનો દૂર : યોગીજી મહારાજ (સ્વામિનારાયણ પ્રકાશ - જૂન - ૨૦૦૮, પા.નં ૭ થી ૧૩, ૩૬)

પરીક્ષાર્થી શ્રી,

સસ્નેહ જય શ્રી સ્વામિનારાયણ

**સત્સંગ શિક્ષણ પરીક્ષા માર્ચ ૨૦૧૨ના નિબંધોની પૂર્વ તૈયારી માટે નીચે જણાવેલ માર્ગદર્શન અને સૂચનો ધ્યાનમાં લેવા વિનંતી.**

૧. નિબંધ એટલે કોઈ નિશ્ચિત વિષય ઉપર વ્યવસ્થિત, ચિંતનપૂર્વક અને મુદ્દાસરનું લખાણ. સત્સંગ શિક્ષણ પરીક્ષામાં પૂછાતા નિબંધો સામાન્ય જ્ઞાનના આધારે, પરીક્ષાર્થીના દૈનિક જીવનમાં સત્સંગના સદ્વાચન અને કથા શ્રવણ અને મનન દ્વારા પ્રાપ્ત થયેલ જ્ઞાનની કસોટી કરતા ૩૫ થી ૪૦ લીટીમાં લખવાના હોય છે.
૨. પરીક્ષાર્થીઓની માગણીને માન આપીને આ વર્ષે પ્રી-ટેસ્ટમાં પૂછાનાર નિબંધોના વિષયો છ માસ અગાઉથી પરીક્ષાર્થીના એકાઉન્ટમાં અપલોડ કરવામાં આવ્યા છે.
૩. પ્રી-ટેસ્ટમાં જે તે પરીક્ષામાં પૂછાનાર નિબંધોના ત્રણે ત્રણ વિષયો આપવામાં આવ્યા છે. માર્ચ ૨૦૧૨ની ફાઈનલ પરીક્ષામાં આ ત્રણ વિષયોમાંથી કોઈપણ એક નિબંધ ચોક્કસપણે પૂછાશે જ. માટે જો આપ આ ત્રણે ત્રણ વિષયો તૈયાર કરશો તો આપ ચોક્કસપણે એક નિબંધ મુખ્ય પરીક્ષામાં ખૂબ જ સારી રીતે લખી શકશો.
૪. આ નિબંધોનું સામાન્ય બંધારણ, લખાણ(મેટર) મોટાભાગે ત્રણ - ચાર વર્ષ દરમ્યાનના સમયગાળામાં પ્રકાશિત થયેલ 'સ્વામિનારાયણ પ્રકાશ'માંથી લેવામાં આવે છે.
૫. અહીં આપેલા નિબંધોનું લખાણ કેવળ દિશા સૂચક છે. આ જ લખાણ ગોખીને પરીક્ષામાં લખવાની જરૂર નથી. આથી વિશેષ સારા મુદ્દાઓનું ચિંતન-મનન કરી આપની રીતે પૂર્વ તૈયારી કરીને લખી શકો છો.
૬. ગુજરાતી માધ્યમ (ભાષા) સિવાયના પરીક્ષાર્થીઓ માટે : આ નિબંધોનું મૂળ પ્રકાશન ગુજરાતી ભાષામાં જ હોવાથી તેનું શબ્દશઃ ભાષાંતર ન કરતાં, તેનો ભાવાર્થ સમજીને પરીક્ષાર્થીએ પોતાની રીતે સમજીને તૈયારી કરવાની રહેશે. પરીક્ષા કાર્યાલય અંગ્રેજી કે હિન્દી ભાષામાં આ નિબંધોનું ભાષાંતર આપી નહિ શકે. તેથી ભાષાંતર કરવા અંગેનો પત્રવ્યવહાર કે ઈ-મેલ પણ પરીક્ષા કાર્યાલયને કરશો નહિ તેવી નમ્ર વિનંતી છે.
૭. ગુજરાતી ભાષા વાંચી, લખી કે બોલી ન શકતા હોય તેવા પરીક્ષાર્થીઓએ માતા-પિતા, વડીલો કે અન્ય સ્વજનો-સ્નેહીઓ પાસે વંચાવીને નિબંધનો ભાવાર્થ સમજી પોતાની રીતે, પોતાના શબ્દોમાં લખીને તૈયારી કરવાની રહેશે.
૮. One essay from the above list of essays will be asked in the Final Examination of March-2012.

## ફાસ્ટફૂડની ફાસ્ટ તકલીફો

■ ડૉ. શિ રી ધ પ ટે લ

આજે રવિવાર. આજે ઘરમાં રજા. ઘરમાં રજા ? હા, કારણ કે આજે રસોડામાં રજા છે ! રવિવાર એટલે તો બહાર ખાવાનો દિવસ. ઘરની બહાર ફાસ્ટફૂડ ખાવાનો વલવલાટ મત્સ્યાવતારની જેમ વધતો જાય છે. કોઈ ફાઈવસ્ટાર હોટલોમાં તો કોઈ સોફેસ્ટિકેટેડ રેસ્ટોરામાં, કોઈ દેશી ગામડાની પદ્ધતિના ખાણી-પીણીના આધુનિક રજવાડાંઓમાં તો કોઈ લારીગલ્લાંવાળાની સોડમાં, જેવી જેની સાલ્વબી ! પીઝા અને દાબેલીઓથી લઈને ઢોંસા કે ખમણીઓના ખૂમચાવાળાઓ સુધી સૌ કોઈ મોડી રાત સુધી ધમધમતા રહે. એની સામે રવિવારે કોઈ ગૃહિણીને રસોડામાં સમય વિતાવવાની તૈયારી નથી. દિવસે દિવસે રસોડાની 'રવિવારી હડતાળ'નો વ્યાપ વધતો જ રહ્યો છે.

માત્ર રવિવાર નહિ, આડા અવળા દિવસોમાંય બહારનું ખાવાનો શોખ ઘરોઘર રોજિંદી ઘટમાળ બની રહી છે. ઓફિસમાંય ક્યારેક ફાસ્ટફૂડની લહેજત લઈ લેવાય. સહેજ પણ સારો પ્રસંગ આવે એટલે ઘરમાં બહારની આઈટમોની જ્યાફત ગોઠવાઈ જાય. ઉત્તરાયણ હોય કે ક્રિકેટની મેચ હોય, એવા દિવસોમાં જે ઉન્માદ હોય એને ચીપીચીપીને બોલતાં સુધરેલા લોકોની ભાષામાં 'ફેસ્ટિવલ મૂડ' કહેવાય ! ફેસ્ટિવલ મૂડને બરાબર જમાવવો છે ? મંગાવો બહારથી ભાવતી આઈટમો. પીઝા, આઈસ્ક્રીમ, પેપ્સી-કોલા જેવાં ઠંડાં પીણાંઓ, અને એવી સંખ્યાબંધ આઈટમો... હા..હા..હી..હી.. અને ગપ્પાં મારતાં ઠાંસી ઠાંસીને ખાઓ. આ 'મોડર્ન ટ્રેન્ડ' છે !

મધ્યમવર્ગના બાળકોમાંય એવું જ. બાળકને ભૂખ લાગી. એણે ખાવાનું માંગ્યું. તરત જ બિસ્કીટનું પેકેટ તૈયાર. તરત જ પોપકોર્નની કોથળી હાજર ! બાળકને શાળાએ જવાનું છે. રિસેસમાં નાસ્તો આપવાનો છે. તરત જ ફાસ્ટફૂડ તૈયાર !

એક જમાનો એવો હતો કે આપણો આખો ભારત દેશ બપોરે અને સાંજે માટીની તાવડી ઉપર ધીમે તાપે રસોઈ કરીને જમતો. આપણે ત્યાં એકે એક કોળિયો ચાવી ચાવીને ખાવાનો મહિમા હતો. ગામડાંઓમાં ક્યાંક ક્યાંક હજુ પણ છે. પરંતુ ઝડપથી બદલાતા જતા યુગમાં, 'ટાઈમ'ની ખેંચ ખાવામાં પણ ખેંચ કરાવે છે. એટલે હવે તરત બનાવીને પીરસી શકાય એવી અનેક વાનગીઓ રોજિંદા આહારમાં ઉમેરાવા લાગી છે. બહાર ઊભાંઊભાં જલ્દી ખાઈ શકાય એવાં ફાસ્ટફૂડની બોલબાલા જામવા માંડી છે. આ ફાસ્ટફૂડે મુંબઈ, દિલ્હી જેવાં શહેરો જ નહીં પરંતુ ગુજરાતનાં નાનાં ગામડાંઓમાં પણ આજે જબરદસ્ત આક્રમણ કર્યું છે.

આ 'ફાસ્ટફૂડ' શબ્દ આવ્યો ક્યાંથી ? ૧૯૫૪ની આસપાસ અમેરિકાના પશ્ચિમ છેડે આવેલા કેલિફોર્નિયા રાજ્યથી ફાસ્ટફૂડના આક્રમણની શરૂઆત થઈ. મેકડોનાલ્ડ કંપનીએ ત્યાં એક નવું રેસ્ટોરન્ટ ખોલ્યું અને જાહેરાત કરી કે અમારે ત્યાં આવનાર ગ્રાહકને અમે ફક્ત ૩૦ સેકન્ડમાં ખાવાનું આપવાની કાળજી લઈશું. રેસ્ટોરાંએ ખરેખર બોલ્યા પ્રમાણે કરી બતાવ્યું. આંખના પલકારામાં ચાલીસ મિલ્કશેક બનાવી આપે. ચીઝનાં બનેલા હેમ્બરગરનો ઢગલો ખડકી દે. વળી એ બધું સાવ સસ્તું ! અને ઉપરથી તેના પર ભરપૂર ચીઝનો રગડો પાથરી આપે. ઠંડાં પીણાં ૧૦ સેન્ટમાં મળતાં. ફેન્ય ફાયની કિંમત નજીવી હતી. મિલ્કશેક ૨૦ સેન્ટમાં અને કોફી તો મફતના ભાવમાં. આનાથી વધુ ગ્રાહકોને શું જોઈએ ? વળી, આ બધી ચીજો તમે જઈને બેસો કે તરત તૈયાર મળે !

આ અસરકારક પદ્ધતિ ત્યાંના લોકોને ફાવી ગઈ. કારણ કે શહેરના લોકો ફાસ્ટ જીવન જીવે છે. આથી આવા ઝટપટ બને અને ફટાફટ પીરસાય એવાં 'ફાસ્ટફૂડ'ની ત્યાં જબરદસ્ત માંગ ઊભી થઈ. હિપ્પીઓને પણ આ ખોરાક દાઢે લાગ્યો. અનેક નવાં નવાં રેસ્ટોરાં ખૂલ્યાં. થોડાં જ સમયમાં અમેરિકાભરમાં ફાસ્ટ-ફૂડનો પવન ફૂંકાવા લાગ્યો.

ફાસ્ટફૂડના વાયરા વાયા તેને ૫૦ વરસ થવા આવ્યાં. ફાસ્ટફૂડ નિત્ય નવાનવા સ્વરૂપે માથું ઊંચકે છે. બીજી તરફ, ફાસ્ટફૂડની સ્વાસ્થ્ય પરની વિપરીત અસરોની પણ ત્યાં જોરશોરથી ચર્ચા થવા લાગી છે.

નિષ્ણાતો કહે છે કે 'આ વાનગીઓથી એથરોસ્કલેરોસીસનો હળવો હુમલો થવાનો સંભવ છે. આ રોગમાં હૃદયની રક્તવાહિનીઓની અંદરની દીવાલોમાં ચરબીના થર બાઝે છે, તેને કારણે રક્તવાહિનીઓ સાંકડી બને છે. પરિણામે લોહીના ભ્રમણમાં રુકાવટ ઊભી થાય છે. ફાસ્ટફૂડ ખવડાવીને આપણે આપણાં બાળકોની રક્તવાહિની રૂંધી નાંખીશું એવો કકળાટ અમેરિકન નિષ્ણાતો કરે છે.

વોશિંગ્ટન ડીસીના હૃદયરોગના નિષ્ણાત અને ત્યાંની જનરલ હોસ્પિટલના હૃદયરોગ વિભાગના વડા તઝેવેલ બેન્ક કહે છે : 'તમે તમારા બાળકને ધિક્કારતાં હો તો એને નમાયાની જેમ શેરીમાં છૂટું છોડી મૂકો. તમને બાળક પ્રત્યે નફરત હોય તો એને રાત-દિવસ ફાસ્ટફૂડ ખવડાવો !'

ફાસ્ટફૂડને લીધે શરીરમાં કોલેસ્ટોરેલ વધુ ઉત્પન્ન થાય છે અને આવાં બિનવપરાયેલા કોલેસ્ટોરેલને ભાંગી નાંખવાની શરીરની ક્ષમતા ઓછી થાય છે. આમ, આપણાં સ્વાસ્થ્યને બેવડો માર પડે છે. આવા કોલેસ્ટોરેલ હૃદયરોગનું મુખ્ય કારણ છે. દર વર્ષે આ કારણે ૭,૦૦,૦૦૦ લોકોનું મરણ નીપજે છે જે અમેરિકામાં થતાં કુલ મરણની સંખ્યા ૫૦% થવા જાય છે.

'સેન્ટર ફોર સાયન્સ ઈન પબ્લિક ઈન્ટરેસ્ટ'ના નિષ્ણાત બેની લાઈબમેનના જણાવ્યા મુજબ અમેરિકનોની મોટામાં મોટી મુશ્કેલી એ છે કે તેઓ ખોરાકની બાબતમાં જરા પણ કાળજી લેતા નથી. પછી પચાસની આસપાસ પહોંચે અને તેમના મિત્રોને હૃદયરોગના હુમલા થવા માંડે એટલે તેઓ ઝબકીને બેઠા થાય છે. ત્યાં સુધીમાં ઘણો વિલંબ થઈ ચૂક્યો હોય છે. ફાસ્ટફૂડની બાબતમાં મોટે ભાગે તો એવું જ બને છે કે રેસ્ટોરાંવાળા સારામાં સારું અન્ન લઈ તેની પાયમાલી કરે છે અને તેમાંથી શરીરને હાનિકારક સ્વાદિષ્ટ ખોરાક તૈયાર કરી તમને પીરસે છે.

મેસેચ્યુસેટ્સમાં આવેલી ફેમિંગહામ હાર્ટ સ્ટડી નામની કાર્ડિઓ-વેસ્ક્યુલર લેબોરેટરીના વડા ડેનિયલ લેવી આ બાબતમાં એક મજાની વાત કહે છે : 'એક સીધી અને સરળ વાત એ છે કે આ ફાસ્ટફૂડવાળા લોકોના સ્વાસ્થ્યની સહેજ જ વધુ ચિંતા કરે અને વાનગીઓ બનાવવામાં ચોખ્ખા અને પોષક પદાર્થો વાપરે તો પણ હજારો માણસોની જિંદગી બચાવી શકાય. કારણ અમેરિકામાં આજે ફાસ્ટફૂડ એક જીવનરીતિ બની ગઈ છે અને એ જ છે લોકોના મૃત્યુનો મહામાર્ગ.'



અમેરિકાની જેમ હવે ભારતમાં પણ ફાસ્ટફૂડ એક જીવનશૈલી બનતી જાય છે. દેશ હોય કે વિદેશ, લોકોની આ રસાસક્તિનો લાભ ઉઠાવીને ફાસ્ટફૂડવાળાઓ પોતાની વાનગીઓ ખપાવવા નવાં નવાં રેસ્ટોરાં ખોલતાં જ રહ્યાં છે. તે ઉપરાંત અનેક યુક્તિઓ અજમાવતા રહ્યા છે. આથી આવી ફાસ્ટફૂડ ચેનલો વચ્ચે કાતિલ સ્પર્ધા જામી પડી છે, હજારો હરતીફરતી કેન્ટીનો શહેરમાં દેખાવા લાગી છે. આ કેન્ટીનો કોલેજોની આસપાસ ઘૂમી વળે છે અને ધૂમ નફો કરે છે.

ફાસ્ટફૂડની ચેનલોના વગદાર માલિકો પ્રચારયુદ્ધમાં મેદાન મારી જાય છે. કારણ, ફાસ્ટફૂડ વિષેની આવી અભ્યાસાત્મક વિગતો માત્ર મેંગેઝિનોમાં પ્રસિદ્ધ થાય છે અને તેને થોડાક લોકો વાંચે છે જ્યારે ફાસ્ટફૂડવાળાઓ કરોડો રૂપિયા ખર્ચાને જાહેર-ખબરો છપાવે છે, ટીવીમાં મોહક જાહેરાતોનાં જાળાં રચે છે, મહાકાય હોર્ડિંગો ચિતરાવે છે. તેઓ લાજતા નથી, ગાજે છે.

ભારતનાં શહેરોમાં તો ફાસ્ટફૂડના ક્ષેત્રે સ્થિતિ વિકરાળ બનતી જાય છે. શહેરીજનો માટે ફાસ્ટફૂડ સમય બચાવનાર તો છે જ ઉપરાંત ‘સ્ટેટસ સિમ્બોલ’ પણ ગણાય છે. મિત્રને કઈ જગ્યાએ મળવું ? તો કહે, ‘ટોમેટોસ’ પર પાંચ વાગે. પ્રિયસ્વજનને ક્યાં બોલાવવા ? તો કહે, ‘સ્વીટ બાઈટ’માં મળીશું, સાંજે સાત વાગે. ત્યાં જઈને ‘સ્ટેટસ’ માણતાં ફાસ્ટફૂડ ખાઈને અનેક રોગો પધરાવી પેટ ફૂલાવવાનું !

આપણાં મોટાં શહેરોમાં તો અનેક પ્રકારના ફાસ્ટફૂડ મળે છે. ઉચ્ચ મધ્યમ વર્ગ અને શ્રીમંત વર્ગને પોસાય એવું અમેરિકન ફાસ્ટફૂડ. આમાં ‘બરગર’ ‘ચીઝ અને કેપ્સીકમ પીઝા’, ‘સ્વીસ સેન્ટવીચીઝ’ તેમજ મિલ્ક-શેક્સ, આઈસ્ક્રીમ, હોટ ચોકલેટ વગેરેનો સમાવેશ થાય છે. મધ્યમવર્ગને પોસાય એવા ભારતીય ફાસ્ટફૂડ જેમાં ઈડલી, ઢોંસા, છોલે ભટ્ટુરે, ઉત્તપા વગેરે વાનગીઓ આવે છે. સાવ સામાન્ય લોકોને પોસાય એવા સડક પરનાં પાઉં-ભાજી અને દાબેલી તો ખરાં જ.

નવી દિલ્હીની ઓલ ઈન્ડિયા ઈન્સ્ટીટ્યૂટ ઓફ મેડિકલ સાયન્સીસના પોષક આહાર વિભાગના વડા શ્રીમતી કૌશિકે આપણે ત્યાં ફૂલેલા ફાસ્ટફૂડના દૂષણ વિષે દુઃખ વ્યક્ત કરતાં કહ્યું હતું : ‘પશ્ચિમના દેશો, ખાસ કરીને અમેરિકા જ્યારે કુદરત, શુદ્ધ ખોરાક તરફ પાછા વળી રહ્યા છે ત્યારે આપણે અમેરિકામાં જે ૨૦ વર્ષ જૂનું બની ગયું છે તેની આયાત કરી રહ્યાં છીએ !’

નિષ્ણાત ડોક્ટરો કહે છે : ‘ફાસ્ટફૂડમાં રેસાવાળાં તત્ત્વો (ફાયબર)નો સંપૂર્ણ અભાવ હોય છે. પરિણામે તે પચવામાં ખૂબ ભારે હોય છે. આવો નહિ પચેલો ખોરાક આંતરડામાં પડી રહેવાથી આંતરડાનું કેન્સર થવાની દહેશત રહે છે. આ ખોરાકમાં પુષ્કળ કેલેરી હોય છે પરિણામે ખાનાર વ્યક્તિની સ્થૂળતા વધી જાય છે, તેમાંથી બીજા ઝનબંધ રોગો થવાનો ભય તો ખરો જ. શહેરોમાં જ્યાં ફાસ્ટફૂડ ધૂમ ખપે છે ત્યાં કોલ્ડ સ્ટોરેજની સગવડો ખામીવાળી હોય છે. આને લીધે તેમાં મૂકેલા ફાસ્ટફૂડ પર ફૂગ અને અન્ય સૂક્ષ્મ જીવાણુઓ બાઝે છે. જેમાંથી ઝાડા, મરડો, ટાઈફોઈડ, ગેસ્ટ્રો-એન્ટરાઈટીસ જેવા રોગો થાય છે. આ ઉપરાંત આ ખોરાક વારંવાર ગરમ કરવો પડતો હોવાથી તેમાંનાં પોષક તત્ત્વો નાશ પામે છે.

ઢોંસા, ઈડલી, ચાટ, છોલેભટ્ટુરે વગેરે વાનગીઓ પ્રમાણમાં વધુ પોષકકારક છે. તેમ છતાં આ વાનગીઓ જે હોટલોમાં તૈયાર થાય છે ત્યાં જરા પણ કાળજી લેવાતી નથી. ખૂબ ગંદકી હોય છે અને વાનગીઓ પીરસનાર પણ ગંદા હોય છે એટલે આ વાનગીઓ ખાનાર રોગનો ભોગ બને એવો સંભવ રહે છે.

પશ્ચિમનાં જાત જાતના સોસ અને ‘પેકડ આઈટમો’ કરતાં આપણાં ચટણી, સંભાર અનેક દરજ્જે સારાં હોય છે. પણ તે તૈયાર કરવામાં જો પૂરતી કાળજી લેવાય તો. પેસ્ટ્રીઝ, કેક્સ, પેટીસ વગેરે ફાસ્ટફૂડમાં પણ પુષ્કળ પ્રમાણમાં સોડિયમ હોય છે. આને કારણે બ્લડપ્રેશર વધે છે અને ફાંદ વધવાનો તેમજ વિવિધ હૃદયરોગ થવાનો સંભવ રહે છે.

ફાસ્ટફૂડની સાથે ચીલ્ડ અને મીઠાં પીણાં પીવામાં પણ પુષ્કળ જોખમ હોય છે. તેને કારણે બ્લડ સ્યુગરનું પ્રમાણ વધે છે અને હાઈપો-ગ્લેસેમીયા કે હાઈપો-ઈન્સ્યુલીનીઝમ (ઈન્સ્યુલીનના પ્રમાણમાં વધારો) થવાનો ભય રહે છે. આમાંથી ન્યુરોસીસ, માર્ઝેઈન, અનિદ્રા, એલર્જી, કંટાળો, વગેરે જન્મે છે અને આપઘાત કરવાની વૃત્તિ પણ તીવ્ર બને છે.

ભારતીય પ્રકારના ફાસ્ટફૂડમાં સૌથી પ્રિય બટાટાંની કાતરી, ચીપ્સ, ખારાં પોપકોર્ન વગેરે છે. આમાં મીઠાંનું પ્રમાણ વધું હોવાથી વજન વધી જાય છે. આઈસ્ક્રીમ, સોડા અને અન્ય મીઠાઈઓ પણ ઓછી હાનિકારક નથી. તેને કારણે બ્લડ સ્યુગરનું પ્રમાણ વધે છે. જેમાંથી અનેક તકલીફોને નિમંત્રણ મળે છે. રોજિંદા ખોરાકમાં પુષ્કળ પ્રમાણમાં લીલાં પાંદડાંવાળાં શાક અને ગાજર, ટામેટાં, મૂળા વગેરે પીરસાવું જોઈએ. એને બદલે આપણે ત્યાં તેલમાં તળેલી બટાટાની ચીપ્સ અપાય છે, તેનાથી શરીરમાં ખોટી ચરબી અને નમકનું પ્રમાણ વધે છે.

અમેરિકામાં લોકો સમયના અભાવને કારણે જ ફાસ્ટફૂડ તરફ વળ્યા છે. ભારતમાં પણ હવે ફાસ્ટફૂડ લોકપ્રિય બન્યું છે તેની પાછળ આ એક જ કારણ નથી. શહેરના લોકો રોજ દાળ, ભાત, શાક, રોટલીથી કંઈક જુદું ખાવા માગે છે અને ફાસ્ટફૂડને તેઓ એક ફેશન, એક મોભો ગણે છે ! પીઝા અને બર્ગર કે મેકડોનાલ્ડની વિવિધ વાનગીઓ જેવું શહેરોમાં મળતું અમેરિકન ફાસ્ટફૂડ મોઘું હોય છે એનું ખરું કારણ એ છે કે આ ફાસ્ટફૂડને મોભો ગણનારા લોકોનાં ખીસાને તે પોસાય છે.

આપણાં દેશી ફાસ્ટફૂડમાં પણ ખોરાકને રંગ અને ફોરમ આપે એવાં ‘રેડ ડાય’, ‘ફાસ્ટ રેડ ઈ’, વગેરે રસાયણો વપરાય છે. જે ખોરાકમાં વાપરવા પર અન્ય દેશોમાં પ્રતિબંધ છે પણ આપણા દેશમાં વાપરવાની છૂટ છે ! એનાથી પણ શરીર અનેક રોગોનું ઘર બને છે.

સ્વામિનારાયણીય જીવનશૈલી પ્રમાણે હરિભક્તો ઘરે રસોઈ બનાવીને સંયમપૂર્વક આહાર કરે એ કેટલી વૈજ્ઞાનિક બાબત છે તે પૂરવાર થઈ ચૂક્યું છે. બહારના ખોરાકની ગંદી રીતભાતો અને તેમાં બેદરકારીપૂર્વક જળવાતી ગંદકીની વાતો નવી નથી. થૂંકીને કે લઘુશંકા કરીને પણ ફાસ્ટફૂડમાં ગમેતેમ ખવડાવનારા વેઈટરોની વાતો પણ સારીપેઠે પ્રકાશિત થઈ ચૂકી છે. તેની સામે સ્વચ્છતાપૂર્વક ઘરમાં બનાવીને ઠાકોરજીને થાળ ધરીને સંયમપૂર્વક ખાવાના અનેક ફાયદાઓ પણ પ્રચલિત છે. આમ છતાં, ફાસ્ટફૂડના અનેક ગેરફાયદાઓ બતાવવામાં આવ્યા પછી પણ લોકોને એના વિના ચાલશે કે કેમ તે સવાલ છે. કારણ કે પોતાના ઘરે પહોંચીને રસોઈ કરીને જમવા જેટલી ધીરજ રહી જ છે ક્યાં ? અને વળી, આધુનિક કોલેજોમાં ભણીને માત્ર ફેશનને જ જીવનની મહત્ત્વની બાબત ગણનારી નારીઓમાં હવે રસોઈને મહત્ત્વનું કામ ગણાય છે જ ક્યાં ?



પરમ પૂજ્ય પ્રમુખસ્વામી મહારાજની પ્રેરણાથી  
બી.એ.પી.એસ. સ્વામિનારાયણ સંસ્થા દ્વારા ગુજરાતના આદિવાસી પ્રાંતમાં સંચાલિત

# આદિવાસી ઉત્કર્ષ પ્રવૃત્તિઓ એક ઝલક..

ગુજરાત આદિવાસીઓની વિપુલ વસ્તી ધરાવતા રાજ્યોમાંનું એક રાજ્ય છે. ભારતના દર દસ આદિવાસીએ એક આદિવાસી ગુજરાતનો છે. ગુજરાતમાં આદિવાસીઓની વસ્તી ગુજરાતની કુલ વસ્તીના ૧૪.૭૬% છે. અર્થાત્ ગુજરાતમાં દર સાત વ્યક્તિએ એક વ્યક્તિ આદિવાસી છે. સને ૨૦૦૧ની વસ્તી ગણતરી અનુસાર ૭૪.૮૧ લાખ આદિવાસીઓ ગુજરાતમાં વસે છે.

ગુજરાતમાં, છેક અંબાજીથી લઈને બનાસકાંઠા, સાબરકાંઠા, પંચમહાલ, દાહોદ, વડોદરા, ભરૂચ, નર્મદા, સુરત, તાપી, વલસાડ, નવસારી, ડાંગ વગેરે ૧૨ જિલ્લાઓના કુલ ૩૧,૬૪૨ ચો.કિ.મી.ના વિસ્તારમાં આદિવાસીઓ છવાયા છે. આ ઉપરાંત ગુજરાતની દક્ષિણે આવેલી ડુંગરમાળા અને તેના પરનાં જંગલોમાં દાદરા-નગરહવેલીનો આદિવાસી પ્રદેશ ૧૯૫૪માં પોર્ટુગીઝ સંસ્થાની ગુલામીમાંથી સ્વતંત્ર બન્યો અને ૧૯૬૧ થી અલગ અસ્તિત્વ ધરાવતો ભારતનો કેન્દ્રશાસિત પ્રદેશ બન્યો. અહીં પણ કુલ ૪૯૧ ચો.કિ.મી. વિસ્તારમાં વારલી, દૂબળા, ઘોડિયા અને ભીલ વગેરે જાતિના આદિવાસીઓ વસે છે. આ પ્રદેશનું વહિવટી કેન્દ્ર સેલવાસ છે.

દાદરાનગર હવેલી સહિત ગુજરાતના તમામ આદિવાસી વિસ્તારોમાં પરમ પૂજ્ય પ્રમુખસ્વામી મહારાજની પ્રેરણાથી શ્રી બી.એ.પી.એસ. સ્વામિનારાયણ સંસ્થાનું આદિવાસી ઉત્કર્ષનું વિશાળ કાર્યક્રમ પથરાયેલું છે. ગુજરાત રાજ્યની કુલ ૨૬ આદિવાસી જાતિઓ પૈકી ભીલ, હળપતિ, દૂબળાઓ, નાયક આદિવાસી, રાઠવા, ડુંગરી ભીલ, ધાનકા, વસાવા, ગામીત, ચૌધરા, ઘોડિયા, વારલી, પટેલિયા, કોટવાળિયા, કુકણા, નાયકડા, કાથોડી વગેરે જાતિઓના આદિવાસીઓ ખૂબ મોટી સંખ્યામાં બી.એ.પી.એસ. સ્વામિનારાયણીય આચાર-વિચારથી અલંકૃત બન્યા છે અને હિન્દુ ધર્મની શુદ્ધ અસ્મિતાથી તેમનાં મસ્તક ઉન્નત બન્યાં છે. અતિ પછાત ગણાતી કાથોડી, કોળયા અને કોલધા જાતિઓના આદિવાસીઓ પણ બી.એ.પી.એસ. સ્વામિનારાયણીય સત્સંગને અનુસરીને જીવનને ઉજ્જવળ બનાવી રહ્યા છે.

સને ૧૯૭૨થી પ્રમુખસ્વામી મહારાજની પ્રેરણાથી સંસ્થાના સંતોએ આજપર્યંત અવિરત વિચરણ કરીને આદિવાસીઓમાં જાગૃતિનો શંખ ફૂંક્યો છે. આજે ઉપરોક્ત તમામ આદિવાસી વિસ્તારોમાં સેંકડો બી.એ.પી.એસ. સત્સંગ મંડળો દ્વારા સંસ્કાર સિંચનની પ્રવૃત્તિ ચાલી રહી છે. આ વિસ્તારોમાં કુલ ૬૦ મંદિરો-સંસ્કારધામો દ્વારા પ્રમુખસ્વામી મહારાજે આદિવાસીઓના ઉત્કર્ષની ગંગોત્રી વહેતી મૂકી છે. ગુજરાત અને દાદરા-નગરહવેલીનાં કુલ ૨,૦૦૦થી વધુ ગામોમાં ૧,૩૧૫ સત્સંગ કેન્દ્રો છે. જેમાં હજારો વનવાસીઓ સત્સંગથી લાભાન્વિત થાય છે. તમામ કેન્દ્રમાં કુલ મળીને ૬૬૨ બાળમંડળ, ૩૪૪ બાલિકા મંડળ, ૭૫૮ મહિલા મંડળમાં આ આખું સત્સંગવટવૃક્ષ છવાયું છે. ૭૫ જેટલા સંતો સ્વામીશ્રીની આજ્ઞાથી આ પ્રદેશને કથાવાર્તા-સત્સંગ, ઉત્સવો-શિબિરો ને વિચરણ દ્વારા લીલોછમ રાખે છે. જુદા જુદા વિસ્તારોમાં ચાલી રહેલી બી.એ.પી.એસ. સ્વામિનારાયણ સંસ્થાની આદિવાસી સેવા-પ્રવૃત્તિઓની એક અલ્પ ઝલક અહીં પ્રસ્તુત છે. દરેક વિસ્તારમાં હજારો આદિવાસીબંધુઓમાં પરિવર્તનનો પવન ફૂંકાયો છે.

દરેક ક્ષેત્રમાંથી ઉપલબ્ધ માહિતીમાંથી અત્રે પ્રસ્તુત સંકલિત થોડીક પરિચયાત્મક માહિતી પણ પ્રમુખસ્વામી મહારાજના વિશાળ આદિવાસી સેવાકાર્યને સમજવા માટે પર્યાપ્ત બની રહેશે.

દાદરા-નગરહવેલીનો વિસ્તાર કેન્દ્ર શાસિત પ્રદેશ છે. આ પ્રદેશમાં બી.એ.પી.એસ. સ્વામિનારાયણ સત્સંગપ્રવૃત્તિ ચાર ચાર દાયકાથી આદિવાસી પરિવારોના સર્વાંગી ઉત્કર્ષનું કાર્ય કરી રહી છે. પ્રમુખસ્વામી મહારાજે અનેક વખત અહીં પધારીને આ વિસ્તારને પાવન કર્યો છે. ચિન્મય સ્વામી, આનંદમૂર્તિ સ્વામી તથા અન્ય સંતોના વિચરણથી આ પ્રદેશમાં સત્સંગની જાગૃતિ ખૂબ આવી છે. આ વિસ્તારમાં સેલવાસ, વાપી, કરમખલ, નાના પોંઢા, સુરંગી - એમ કુલ પાંચ સત્સંગ પ્રવૃત્તિ ક્ષેત્રો હેઠળ કુલ ૮૯ સત્સંગમંડળો ગતિમાન છે. આ ક્ષેત્રોમાં કુલ ૮૩ મહિલામંડળો, ૩૬ બાલિકામંડળો અને ૫૩ બાળમંડળો પણ પ્રવૃત્ત છે. દાદરા-નગર હવેલી વિસ્તારમાં કુલ ૧૨ બી.એ.પી.એસ. સ્વામિનારાયણ હરિમંદિરો અને ૯ કુટિરમંદિરો દિવસ-રાત આધ્યાત્મિક આંદોલનો પ્રવર્તે છે.

■ સેલવાસના બી.એ.પી.એસ. મંદિર દ્વારા વ્યસનમુક્તિ અભિયાન, વૃક્ષારોપણ, રોજગારલક્ષી આયોજનો, એમ્બ્યુલન્સ સેવા, ઉચ્ચ શિક્ષણ સેવા વગેરે સેવાઓ ગતિમાન છે. અહીં ગુલાબી પથ્થરનું ભવ્ય શિખરબદ્ધ બી.એ.પી.એસ. મંદિર પણ નિર્માણાધીન છે.

■ સેલવાસમાં બી.એ.પી.એસ. સ્વામિનારાયણ સંસ્થા દ્વારા સ્થાપિત આધુનિકતમ શાળાએ પણ અનેક વિદ્યાર્થીઓની કારકિર્દી ઉજ્જવળ બનાવી છે. જૂનિયર કે.જી.થી લઈને ધોરણ ૯ સુધી ૭૫૦ વિદ્યાર્થીઓને સી.બી.એસ.ઈ.માં અભ્યાસ કરાવતી આ શાળાએ રાષ્ટ્રીય સ્તરે સિદ્ધિઓ હાંસલ કરી છે. તાજેતરમાં શાળાના વિદ્યાર્થી એમ.બી. મૃત્યુંજયે 'નેશનલ સાયન્સ ટેલેન્ટ સર્ચ એકઝામ'માં સમગ્ર ભારતના ૩,૭૫,૦૦૦ વિદ્યાર્થીઓમાંથી સર્વપ્રથમ સ્થાન મેળવી સિદ્ધિ હાંસલ કરી છે.

■ આ ઉપરાંત બી.એ.પી.એસ. બાળમંડળમાંથી જ પ્રેરણાબળ પ્રાપ્ત કરીને સાયન્ટિસ્ટ તરીકે રાષ્ટ્રીય સ્તરે કારકિર્દી ઘડનાર ડો. પ્રકાશ આર. પટેલે અનેક સંશોધનાત્મક નિબંધો લખીને કૃષિક્ષેત્રે મહત્વનું પ્રદાન કર્યું છે. વિજ્ઞાની પદ સુધી પહોંચનાર તેઓ સર્વપ્રથમ આદિવાસી સુશિક્ષિત છે. દાદરા-નગરહવેલીના આદિવાસી સમાજમાં તેઓ પીએચ.ડી. થયેલા સર્વપ્રથમ તેજસ્વી વિદ્યાર્થી છે.

■ વહેમ અને વ્યસન આદિવાસી પ્રજાના લોહીમાં વણાયેલી ખાસિયત છે. જીવનમાં કંઈપણ ઘટના બને, કે જીવનનો કોઈપણ પ્રસંગ હોય, ભગત-ભૂવાને નિમંત્રણ હોય જ. લગ્ન હોય કે મરણ, ભગત-ભૂવાને બોલાવીને મરઘી વધેરે અને તેના ઊડતા લોહીના ફૂવારાથી જાતને ધન્ય કરે ત્યારે જ તેને સંતોષ થાય. પ્રત્યેક પરિવારમાં, પ્રત્યેક અવસરે દારૂ-તાડીની અને માંસ-મચ્છીની રેલમછેલ અહીં તદ્દન સામાન્ય બાબત છે. પરંતુ અબુધ જણાતા આ આદિવાસીઓ વચ્ચે સતત વિચરણ કરીને સ્વામીશ્રી અને સંતોએ એક નૂતન ક્રાંતિ આણી છે. હજારો આદિવાસીઓને વ્યક્તિગત મળીને નિર્વ્યસની કર્યા છે. મેલી વિદ્યા, વહેમ, અજ્ઞાન અને વ્યસનોની ગુલામીમાંથી છોડાવી એમનામાં હિંદુ સંસ્કૃતિનું ખમીર જગાડ્યું છે.

એમનાં ઝૂંપડે ઝૂંપડે ધૂમીને, પરિશ્રમ કરીને સંતોએ એમનાં જીવનધોરણને ઊંચી સપાટી પર મૂકી દીધું છે. સંતોના સ્નેહસંગે, વ્યસનોની ખર્ચાળ ગુલામીમાંથી છૂટવાને લીધે સ્વાભાવિક રીતે જ એમનું આર્થિક ધોરણ ઊંચું આવ્યું છે. દારૂના દાવાનળમાં સપડાયેલા સામરવરણીના ખુશાલભાઈનો પગાર કદીયે ઘર સુધી પહોંચ્યો ન હતો. સત્સંગના રંગે રંગાયા પછી તેઓ વર્તમાનકાળે કુશળતાથી વ્યવહાર ચલાવે છે. સ્વામિનારાયણીય સંસ્કારોથી સજ્જ થયેલા હજારો આદિવાસી પરિવારો આજે વ્યસન અને વહેમની આ જડ ગુલામીમાંથી તદ્દન મુક્ત થયા છે.

રાંધા ગામના એક યુવાન રમણભાઈ ગામિતને એક વખત સખત તાવ આવ્યો. લોકોએ ભૂવા પાસે લઈ જવા ખૂબ આગ્રહ સેવ્યો, પરંતુ રમણભાઈને સમજાવવા તેઓ સફળ ન થયા. છેલ્લે કેટલાક અંધશ્રદ્ધાળુઓ રમણભાઈ પ્રત્યેની મમતાથી દાણા ઉતારી ભૂવા પાસે લઈ ગયા. ભૂવાએ મંત્રેલો દોરો આપી કહ્યું : ‘આ દોરો જો તે નહિ બાંધે તો તે મરી જશે.’ રમણભાઈએ મૃત્યુની પરવા ન કરી. દોરો ન બાંધ્યો. ભૂવાની માન્યતા ખોટી પાડી.

કોંકણી આદિવાસી સમાજમાં એવો રિવાજ છે કે સગર્ભા સ્ત્રીને દોરો બાંધવામાં આવે. છઠ્ઠીના દિવસે તે દોરો બાળકને બાંધવામાં આવે. આ પ્રકારની ક્રિયા કરવામાં ન આવે તો તે પ્રાણઘાતક નીવડે તેવી જડ માન્યતા વર્ષોથી ઘર કરી ગયેલી. અભણ પણ નિષ્ઠાવાન આદિવાસી મગનભાઈએ સમાજના દબાણને ગણકાર્યા વિના આ માન્યતાને ઠેબે ચડાવી : ‘ભલે પત્ની મરે, બાળક મરે કે હું મરું, પણ મારે તો દોરો ન જ જોઈએ.’ વર્ષો જૂની રૂઢિ તૂટી. મગનભાઈએ સમાજમાં નવી ભાત પાડી.

દાદરા-નગરહવેલીનો વિસ્તાર સરકારે Wet Area (જ્યાં દારૂબંધીનો નિષેધ નથી તેવા વિસ્તાર) તરીકે જાહેર કરેલો છે. એટલે ઝૂંપડે ઝૂંપડે દારૂ ગળાય. મોટા પ્રમાણમાં દારૂ પીવાથી લોકોની આર્થિક સ્થિતિ ખૂબ કથળી ગયેલી છે, તેથી લૂંટફાટ પણ ખૂબ થાય.

આજથી પંદર વર્ષ પહેલાં ડુંગરાળ પ્રદેશમાં આવેલા સીલી ગામમાં લૂંટનું પ્રમાણ ખૂબ જ હતું. ધોળા દિવસે સેંકડો માણસો લૂંટાયાના દાખલા બન્યા છે. આ લૂંટ ચલાવવામાં એકલા હતા સોન્યા ભગત. મૂળ રાંધાના સોન્યાના નામથી લોકો ધૂજે. જમીનધારીઓ પણ રાત્રે સીલી જતાં ડરતા. કેટલાક સરકારી અધિકારીઓની વિનંતીથી સ્વામિનારાયણીય સંતોએ આ લૂંટારુઓને નાથવા બીડું ઝડપ્યું. સંતોના સક્રિય પ્રયત્નોના અંતે દાદરા-નગરહવેલીમાં સૌ પ્રથમ સંસ્કારધામ સમા સીલી ગામના કુટીર મંદિરમાં સ્વામીશ્રીના વરદ હસ્તે મૂર્તિપ્રતિષ્ઠા થઈ અને સંસ્કારનો સ્રોત વહેતો મુકાયો. દૈવયોગે સોન્યા સંતોના સંપર્કમાં આવ્યો અને સત્સંગી બન્યો. રાતોરાત ભજન લલકારતા આ સોન્યાને જોઈ સૌ દિંગ થઈ જતા.

તટકાલીન મામલતદાર એમ.એમ. કોટવાલ તો ઘણીવાર કહેતા કે આ સ્વામિનારાયણ મંદિર બન્યા પછી સીલીના ‘ચેપ્ટર કેશ’નું પ્રમાણ ખૂબ જ ઓછું થઈ ગયું છે. સરકારમાં પણ સારી છાપ પાડનાર આ કુટીરમંદિરનો પ્રભાવ ધીરે ધીરે વધતો ગયો. ઝૂંપડે ઝૂંપડે ઘરમંદિરો થયાં.

સત્સંગી ગિરિજનોની પ્રામાણિકતા દાદ માંગી લે તેવી છે. પતાવાળાની નોકરી કરતા કુડાયાના ડાહ્યાભાઈ વેસ્તાવાળાને દસ હજાર રૂપિયાનું પાકીટ મળ્યું. પારકા ધનમાં લલચાયા સિવાય તેમણે મૂળ માલિકને પાકીટ સોંપવાની તજવીજ કરી. ભગવાનની આજ્ઞા પાળ્યાનો સંતોષ તેમના મુખ પર અછતો ન રહ્યો.

વ્યસનનું કે માંસાહારનું આ પરિવારોમાં નામોનિશાન નથી. આ પરિવારોના સંસ્કાર જોઈને સૌ આશ્ચર્યચકિત થઈ જાય છે. વ્યસન અને અન્ય દૂષણોમાંથી મુક્ત થવાને લીધે આ પરિવારોની સુખ-સમૃદ્ધિ દિન-પ્રતિદિન વૃદ્ધિ પામી રહી છે. ઝૂંપડાંને બદલે પાકાં મકાનો થયાં છે. એક વખત જેમને વસ્ત્ર પહેરવાનું પણ ભાન નહોતું, તેમનું જીવનધોરણ આજે, સત્સંગના યોગે, ખૂબ ઊંચું આવ્યું છે. એટલું જ નહીં, પોતાના જ પૈસે ભક્તિભાવપૂર્વક સંસ્કાર મંદિરો પણ તેમણે રચ્યાં છે. સીલી, તંબાલી, સામરવરણી, રાંધા જેવાં ગામો એનાં ઉત્તમ ઉદાહરણો છે. રાંધા ગામના આદિવાસી યુવાનો તો જાતે જ જંગલમાંથી વાંસ કાપી લાવ્યા, જાતે જ દિવાલો બનાવી અને અંદર સંતોના હાથે ભગવાન પધરાવ્યા છે. ડુંગરોની ખીણમાં સવાર-સાંજ આરતીના ઘંટારવ અને ઉચ્ચ સ્વરે ગવાતા સ્તુતિગાનથી વાતાવરણમાં પ્રસરેલી આહલાદકતાનો સ્વાદ અનેરો હોય છે. તેમનો નિરધાર છે કે ભવિષ્યમાં આ ગામમાં મોટું મંદિર કરવું છે. તેમનામાં શિક્ષણ અને સંસ્કારની કક્ષા સવર્ણોને શરમાવે તેવી થઈ છે.

જે આદિવાસી બાળકોને સમજણા થાય ત્યારથી પક્ષીઓના શિકાર કરવાની સહજ તાલીમ હોય અને સનનન... કરતી ગોફણો અને ગીલોલો તેમના હાથમાં રમતી હોય એ બાળકો આજે કેવા સંસ્કારી બન્યા છે ! રાંધા ગામનો નાનો બાળક સતીષ તેની મા સાથે ગુજરાતના અંદરપાડા ગામે ગયો. ત્યાં મહેમાનગતિમાં માછલી રાંધી હતી. સતીષે તે માછલી ન જ ખાધી. ભૂખ્યા રહેવાની દૃઢતા જોઈ સગાંઓએ જુદા સ્વચ્છ વાસણમાં ફરીથી રસોઈ બનાવી. આ પ્રસંગ પછી તેના પિતા આદલુભાઈ ભોયા પણ યુસ્ત સત્સંગી બન્યા. આ જ ગામના વારલી જાતિના બાળક રાજેશ ઈન્દ્ર વાજવડીયાને કે પછી સેલવાસના અપંગ બાળક હરેશને ધન્યવાદ દેવા ઘટે કે જેણે પોતાનાં માંસાહારી મા-બાપથી અલગ જાતે રસોઈ બનાવી.

આમ છતાં, હજુ તેમનામાં નિરક્ષરતાનું પ્રમાણ ઘણું મોટું છે. તેમના ઓછા ભણતરનો લાભ લઈને તેમનું શોષણ કરનારો વર્ગ પણ ઘણો મોટો છે. તેમના શોષણને અટકાવવા માટે, ખાસ કરીને દાદરા-નગરહવેલી વિસ્તારમાં, તેમને માર્ગદર્શન આપવાની ખાસ વ્યવસ્થા કરવામાં આવી છે. લગ્ન વગેરે તેઓના સામાજિક પ્રસંગોમાં તેમને વધુ ખર્ચ ન થાય તે માટે દહેજરહિત સમૂહલગ્નોત્સવ યોજવા ઉપરાંત, તેમને માર્ગદર્શન અને જીવન જરૂરિયાતો પણ પૂરાં પાડવામાં આવે છે. તેમને સદ્ધર બનાવવા ગૃહઉદ્યોગોના પ્રયોગો પણ સંસ્થા દ્વારા કરવામાં આવ્યા છે.

સેલવાસનું અક્ષરપુરુષોત્તમ મંદિર તો આદિવાસીઓના સર્વાંગી વિકાસનું મુખ્ય કેન્દ્ર બન્યું છે. જનજાગૃતિ કાર્યક્રમો, રોગનિદાન સારવાર યજ્ઞો, સાંસ્કૃતિક કાર્યક્રમો, સ્નેહમિલન સમારંભો, શિક્ષણ શિબિરો, બાળ-યુવા-વડિલ-મહિલા મંડળો, સંસ્કાર કેન્દ્રો, નેતૃત્વ તાલીમ શિબિરો, સત્સંગ પરીક્ષાઓ, રાહત પ્રવૃત્તિઓ, જેવી અનેક વિકાસલક્ષી પ્રવૃત્તિઓ સંસ્થા દ્વારા અહીં હાથ ધરાઈ છે. અને આવી પ્રવૃત્તિઓ દ્વારા એમના ઉત્કર્ષનાં નવાં નવાં દ્વારા ખોલાતાં રહે છે.

બી.એ.પી.એસ. સ્વામિનારાયણ સંસ્થા દ્વારા છેલ્લાં ૩૫ વર્ષથી આ પ્રદેશમાં સત્સંગનાં બીજ વવાયાં છે. વર્ષો સુધી નરેન્દ્રપ્રસાદ સ્વામી, નંદકિશોર સ્વામી તથા તીથલ ક્ષેત્રમાંથી અન્ય સંતોએ અહીં ગામડાંઓમાં વિચરણ કરીને અહીં સત્સંગની અભિવૃદ્ધિ કરી છે. ડાંગમાં સત્સંગ પ્રવૃત્તિના વિકાસ અને પ્રસાર માટે, સંસ્થાના નવસારી સ્વામિનારાયણ મંદિરના સંતો અથાક પરિશ્રમ કરે છે. સને ૧૯૯૯ના મે માસમાં જામલાપાડા, ચાટણવડા જેવાં આદિવાસી ગામોમાં તેઓનાં ઝૂંપડાંઓમાં પધરામણીઓ કરીને પ્રમુખસ્વામી મહારાજે તેઓને જે અમૂલ્ય લાભ આપ્યો હતો, તેની સ્મૃતિ કરતાં આજેય એ આદિવાસીઓ ગદ્ગદ થઈ જાય છે. સ્વામીશ્રી ડાંગ જિલ્લામાં સ્વામીશ્રીએ આદિવાસી સંમેલનમાં ઉપસ્થિત રહીને સૌને જે અણમોલ પ્રેરણાઓ આપી હતી તે બદલ આદિવાસી ભક્તો હંમેશાં સ્વામીશ્રી પ્રત્યે કૃતકૃત્ય રહ્યા છે. સ્વામીશ્રીએ જ્યાં પધરામણી કરી હતી એ જામલાપાડા ગામની પવિત્ર થયેલ ભૂમિ ઉપર અત્યારે સુંદર મંદિર તૈયાર થઈ રહ્યું છે. જામલાપાડા ગામમાંથી સંસ્થાને એક સાધુની પણ ભેટ મળેલ છે. આ આદિવાસી પ્રાંતમાં હાલ મંગલનયન સ્વામી તથા મુનિચરણ સ્વામી વિચરણ કરી રહ્યા છે. આ પ્રદેશની સત્સંગપ્રવૃત્તિઓ તથા અન્ય સેવા પ્રવૃત્તિઓની થોડીક ઝલક...

- ડાંગ પ્રદેશના ૪૦ ગામોમાં સંતોનું વિચરણ થાય છે, જેમાં ૨૩ ગામોમાં સત્સંગમંડળો ગતિમાન છે.
- ડાંગ-વાંસદા ખાતે સંસ્થા દ્વારા સંચાલિત ‘સ્વામિનારાયણ ફરતા દવાખાના’ની પણ સેવા ઉપલબ્ધ છે. ડાંગ અને વાંસદા વિભાગનાં કુલ ૬૫ ગામના અંદાજે ૨૦,૦૦૦ માણસોને આ સેવાનો લાભ મળે છે.
- આદિવાસી પરિવારોને આર્થિક રીતે સ્વનિર્ભર થવા કૃષિ ક્ષેત્રે વિવિધ સહાય આપવામાં આવે છે. આંબાની કલમ તથા ફળાઉ જાતોના છોડનું વિતરણ પણ સમયાંતરે કરવામાં આવે છે.
- ૬૦૦ જેટલા વિદ્યાર્થીઓને શૈક્ષણિક સહાય, નોટબુક તથા વસ્ત્ર વિતરણ કરવામાં આવે છે.
- સાંસ્કૃતિક પ્રવાસ દ્વારા ૩૦૦ જેટલા આદિવાસીબંધુઓને દિલ્હી અક્ષરધામ તથા અન્ય મંદિરોનાં દર્શનનો લાભ અપાવવામાં આવે છે.
- અહીં આગના બનાવો વારંવાર બને છે. આથી, ઘર સળગી જાય કે અન્ય આપત્તિઓમાં પણ આદિવાસી પરિવારોને સંસ્થા દ્વારા મદદ કરવામાં આવેલ છે.
- છ કુટિર મંદિરો અને વઘઈ-આહવામાં બે સંસ્કારધામ સહિત કુલ ૮ બી.એ.પી.એસ. કેન્દ્રો વિવિધ લોકસેવા તેમજ સત્સંગ પ્રવૃત્તિમાં કાર્યરત છે.
- ૩૭ ગામોમાં વસ્ત્રવિતરણ, ઘઉં, લોટ, ચોખા અન્નવિતરણ અને બિસ્કિટ વિતરણ કરવામાં આવ્યું હતું.

ભગવાન સ્વામિનારાયણ નીલકંઠવર્ણી વેશે જ્યાંથી ૨૦૦ વર્ષ પૂર્વે પસાર થયા હતા એ પ્રાસાદિક ભૂમિ પર સને ૧૯૭૨માં પ્રમુખસ્વામી મહારાજ પધાર્યા અને અહીંના આદિવાસી ક્ષેત્રમાં સત્સંગ પ્રવૃત્તિ અને સંતવિચરણનો આરંભ થયો હતો. ત્યારબાદ સ્વામીશ્રી અને સંતોએ અવારનવાર અહીં પધારીને આદિવાસીઓના ઉત્કર્ષને વેગ આપ્યો હતો.

સને ૧૯૮૪ના ફેબ્રુઆરીમાં પ્રમુખસ્વામી મહારાજ અહીં આંબાતલાટ, સિદ્ધુમ્બર, ભોમાપારડી, કુકેલ, રાનેવરી કલ્લા વગેરે ગામોમાં ઊભડખાબડ માર્ગે ગાડામાં કે પગપાળા જઈને આદિવાસી બંધુઓને સત્સંગનું દિવ્ય સુખ આપ્યું હતું. આદિવાસીઓનાં જીવનને ઉન્નત બનાવવા સ્વામીશ્રી તેમનાં ઝૂંપડે ઝૂંપડે ઘૂમ્યા હતા એને આજેય એ આદિવાસી બંધુઓ વીસરી શક્યા નથી. અહીંના આદિવાસી બંધુઓ - ખલપુ લાછિયા વારલી તથા શંકર કાનજી દિવાને ખળીમાં(અનાજ કાઢવાનો ચોક)બેસી સ્વામીશ્રીએ વર્તમાન ધારણ કરાવેલાં ત્યાં આજે શંકર કાનજીના ફળિયામાં કુટિરમંદિર થયું છે અને ગામના ગોભાલ ફળિયા અને નાયક-પાડામાં ૨૫૦થી વધુ આદિવાસી પરિવારો ભક્તિમય જીવન જીવે છે.

સમયાંતરે ધરમપુર અને કપરાડા એમ બે તાલુકા અસ્તિત્વમાં આવ્યા અને આ બંને તાલુકાઓ તેમજ ચીખલી તાલુકામાં પ્રમુખસ્વામી મહારાજની પ્રેરણાથી આદિજાતિમાં સત્સંગ-પ્રવૃત્તિ આજે વિશાળ વટવૃક્ષ બની ગઈ છે.

### ■ કપરાડા તાલુકો :

કપરાડા તાલુકો સંપૂર્ણ આદિવાસી પછાત તાલુકો છે. અહીં પ્રમુખસ્વામી મહારાજની પ્રેરણાથી આદિમ જૂથ કોળયા જાતિમાં બી.એ.પી.એસ. સ્વામિનારાયણ સત્સંગ ખૂબ પ્રસર્યો છે. ભારતના આદિવાસી વિસ્તારોમાં આ જાતિ અત્યંત ગરીબ અને સૌથી પછાત ગણાય છે. આ પ્રદેશમાં વિવેકરત્ન સ્વામી અને સરલદર્શન સ્વામી વિચરણ કરે છે. આ ક્ષેત્રમાં ચાલતી સત્સંગપ્રવૃત્તિઓ તેમજ લોકસેવાની વિવિધ પ્રવૃત્તિઓની એક ઝલક :

- આ તાલુકાના ૩૨ ગામોમાં નિયમિત વિચરણ ચાલે છે. ૫૭૦૦થી વધુ આદિવાસી હરિભક્તો સત્સંગ લાભ લે છે.
- કપરાડા તાલુકામાં બી.એ.પી.એસ. સંસ્થા દ્વારા ફરતું દવાખાનું કાર્યરત છે, જેમાં ૧૨૭ ગામોને મફત રોગનિદાન અને દવાવિતરણનો લાભ આપવામાં આવે છે.
- આ ઉપરાંત રક્તદાન યજ્ઞ, વ્યસન-મુક્તિ યજ્ઞ, સિક્કલસેલ એનિમિયા બ્લડ ટેસ્ટ કેમ્પ વગેરે વિવિધ રોગનિદાન યજ્ઞો દ્વારા આરોગ્યની જાગૃતિ આણવામાં આવે છે.
- વસ્ત્રવિતરણ વગેરે આદિવાસી પરિવારોને જીવન-જરૂરિયાતની ચીજોનું વિતરણ કરવામાં આવે છે.
- બી.એ.પી.એસ. સંસ્થા દ્વારા આદિવાસી પરિવારોમાં દહેજ વિનાના સમૂહ લગ્નોત્સવ દ્વારા સામાજિક જાગૃતિ લાવવામાં આવી છે. સને ૨૦૦૦માં પ્રમુખસ્વામી મહારાજના સાંનિધ્યમાં યોજાયેલ સમૂહ લગ્નોત્સવ સૌ માટે ખૂબ પ્રેરક બની રહ્યો.

- આદિવાસી બાળ-બાલિકાઓને શૈક્ષણિક સહાય આપવામાં આવે છે.

### ■ ધરમપુર તાલુકો :

ધરમપુર તાલુકામાં ૧૯૭૫થી કાંગવી ગામે સત્સંગપ્રવૃત્તિ શરૂ થઈ છે. સને ૧૯૮૨માં સ્વામીશ્રી આંબાતલાટ પધાર્યા. ત્યારપછી અનેક ગામોમાં સત્સંગ-પ્રવૃત્તિ અને કુટિર-મંદિરો થયાં છે. હાલ હરિતીર્થ સ્વામી, પાવનપુરુષ સ્વામી અહીં વિચરણ કરે છે. કુલ ૩૧ ગામોમાં સત્સંગપ્રવૃત્તિ ગતિમાન છે. કુલ ૪,૫૦૦થી વધુ હરિભક્તો તેનો લાભ માણે છે.

- આ તાલુકામાં પણ મોબાઈલ દવાખાનું ચાલે છે. ધરમપુર તાલુકાનાં ૧૨૭થી વધુ ગામોમાં આદિજાતિના લોકોને મફત સારવાર આપવામાં આવે છે. આ ઉપરાંત બ્લડ-કેમ્પ, સિકલ-કેમ્પ, વસ્ત્ર-વિતરણ વગેરે પ્રવૃત્તિ કાર્યરત છે.

### ■ ચીખલી તાલુકો :

ચીખલી તાલુકામાં સને ૧૯૭૪માં શરૂ થયેલી સત્સંગ-પ્રવૃત્તિ અને સ્વામીશ્રીના અથાગ વિચરણના ફળસ્વરૂપે છેલ્લા ચાર દાયકાઓથી સતત આદિવાસી ઉત્કર્ષનાં વિવિધ સોપાનો સર થતાં રહ્યાં છે. અહીંનું દોણજા ક્ષેત્ર સત્સંગ પ્રવૃત્તિનું સૌથી જૂનામાં જૂનું ક્ષેત્ર સને ૧૯૭૪થી અસ્તિત્વમાં છે. સંપૂર્ણ આદિવાસી ચીખલી તાલુકામાં કુલ ૧૯૪ ગામોમાં અખંડમંગલ સ્વામી અને શ્વેતદર્શન સ્વામી વિચરણ કરે છે. આ પ્રાંતમાં ૯૧ મંડળો સત્સંગપ્રવૃત્તિ, મહિલામંડળ, બાળ-બાલિકા મંડળો કાર્યરત છે. આ વિસ્તારમાં ૯૫૦૦ હરિભક્તો નિયમિત સત્સંગનો લાભ લે છે. અહીં ખાતેની કેટલીક વિશિષ્ટ પ્રવૃત્તિઓ આ મુજબ છે :

- પ્રમુખસ્વામી મહારાજના સાંનિધ્યમાં સને ૧૯૭૪, ૧૯૮૦, ૧૯૮૨, ૧૯૮૪ વગેરે વર્ષોમાં પ્રતાપનગર, ટાંકલ, આછવણી વગેરે ખાતે યોજાયેલી શિક્ષક જ્ઞાનશિબિરો દ્વારા ૫૦૦૦થી વધુ શિક્ષકોને આદિવાસીઓના જીવનધોરણ ઉચ્ચત બનાવવા માટે વિશેષ તાલીમ આપવામાં આવી હતી. આ શિબિરો આજપર્યંત સમયાંતરે યોજાતી રહી છે. તાજેતરમાં આછવણી ખાતે ૨૦૦૯માં શિક્ષક જ્ઞાનશિબિર યોજાઈ હતી.
- સંસ્થા દ્વારા દર વર્ષે અત્રેના બાળ-બાલિકા-કિશોર-કિશોરીને શૈક્ષણિક સહાય આપવામાં આવે છે.
- ધરમપુર-કપરાડા માટે બી.એ.પી.એસ. મહિલા વિભાગ દ્વારા મહિલાઓના પ્રૌઢશિક્ષણને લગતાં કાર્યો હાથ ધરવામાં આવ્યાં છે.
- દર વર્ષે મહિલા પ્રતિભા-વિકાસ કાર્યક્રમ હેઠળ ૧૫૦૦થી ૨૦૦૦ મહિલાઓ વ્યવસાયલક્ષી અને અન્ય ગૃહલક્ષી તાલીમ આપવામાં આવે છે.

દક્ષિણ ગુજરાતના સુરત અને તાપી જિલ્લાઓના તળ પ્રદેશમાં ભગવાને કુદરતી સૌંદર્ય તો છૂટે હાથે વેર્યું છે, પરંતુ આ પ્રદેશના લોકોમાં આધ્યાત્મિક, સામાજિક, શૈક્ષણિક ક્ષેત્રે વર્ષોથી અંધકાર છવાયેલો હતો. પ્રમુખસ્વામી મહારાજે ૧૯૭૧માં આ વિસ્તારના સાંકરી ક્ષેત્રમાં એક નાના મંદિરમાં મૂર્તિપ્રતિષ્ઠા કરીને સમાજોત્કર્ષનો પાયો નાખ્યો. અનેક વખત પધારીને સ્વામીશ્રીએ આ વિસ્તારમાં સત્સંગને પોષણ આપ્યું. સ્વામીશ્રીએ વાંસકૂઈ ગામમાં વરસતા વરસાદે ફાનસના અજવાળે કાદવ ખૂંદતાં ખૂંદતાં સોથી વધુ ઘરોમાં પધરામણી કરી. ઉનાળાના ધોમધખતા તાપમાં સ્વામીશ્રીએ અહીં ૨૦ દિવસમાં ૯૦ ગામોમાં વિચરણ કર્યું છે. કરચેલિયા ગામમાં પરસેવો પાડ્યો છે, એ પરસેવાનાં ટીપાંમાંથી આજે આ વિસ્તારમાં હજારો નિષ્ઠાવાન સત્સંગીઓનો એક સમાજ તૈયાર થયો છે. તા. ૧૮-૫-૨૦૦૧ના રોજ સાંકરીમાં ભવ્ય પંચ શિખરીય મંદિર રચી અક્ષર-પુરુષોત્તમ મહારાજનો જયનાદ કર્યો. આજે અસંખ્ય વાલિયા મંદિરમાંથી પ્રેરણા મેળવીને વાલ્મીકિ બન્યા છે.

અહીં ૭૦ ટકા વસતી આદિવાસીઓની છે, જેમાં ચૌધરી, ગામિત, હળપતિ જેવી અનેક જાતિઓ છે. હળપતિ જાતિ આદિવાસીઓમાં છેલ્લા પ્રકારની જાતિ ગણાય છે. આ જાતિને સુધારવી એટલે લોઢાના ચણા ચાવવા જેવી વાત ગણાય. આ જાતિના લોકો જે કમાય તેનો અડધો ભાગ વ્યસનોમાં વાપરે અને બીજો ઘરકામમાં. બચતનું તો નામ જ નહીં. દીકરાઓને નાનપણથી જ દારૂ પીવડાવે, પરંતુ અનાજ તો ઘરમાં હોય તો ખવડાવેને ! આ વિસ્તારનો મોટા ભાગનો વર્ગ અભ્યાસમાં માનતો નહોતો. માતાપિતા પોતાના પુત્રને પરાણે ઘરેથી નિશાળે મોકલે તો દફતર લઈ તળાવ કિનારે જાય ને માછલાં પકડે, મરઘાંનાં બચ્ચાંને પકડીને કાકડીની જેમ ખાય. ઘણા વિદ્યાર્થી એસ.એસ.સી.માં નાપાસ થાય એટલે હાથમાં પાણી લઈને કહે કે, આજથી નિશાળ બાજુ જાય એ બીજા ! આમ, શિક્ષણનું સ્તર પેઢી-દરપેઢીથી અત્યંત નાજુક.

સ્વામીશ્રીની આજ્ઞાથી આ ક્ષેત્રમાં ગણદેવી, વાંસદા, માંડવી અને વાલોડ તાલુકાનાં ૪૮૦ ગામોમાં સંતો સતત વિચરણ કરે છે. આ ક્ષેત્રોમાં નિયમિત સત્સંગ સભાઓ થાય છે. સંતોના પ્રસંગથી અનેક લોકો નિર્વ્યસની બની ઊર્ધ્વગામી જીવન જીવતા થયા છે. પ્રમુખસ્વામી મહારાજે સાંકરીમાં શિખરબદ્ધ મંદિરની ભેટ ધરી ત્યારબાદ આ વિસ્તારનાં આદિવાસી ગામોમાં સત્સંગ ખૂબ જ વધ્યો છે. આજે ૩૨૦ સંયુક્તમંડળ, ૧૦૦ મહિલામંડળ, ૧૫૦ બાળમંડળ, ૧૫૦ બાલિકામંડળ, ૧૬ કિશોરમંડળ, આ બધાં જ મંડળો કથાવાર્તા, કીર્તન-ભજન-ભક્તિથી ગુંજતા રહે છે. દરેક મંડળોમાંથી દર પૂનમે સાંકરી મંદિરે હજારો ભક્તો દર્શને ઊમટે છે અને વ્યસનમુક્ત બને છે. ઘણા આદિવાસી હરિભક્તો પગપાળા આવી દર્શન કરી ધન્ય બને છે. આ વિસ્તારમાં પૂર્વે નારાયણપ્રસાદ સ્વામી, પ્રભુસ્વરૂપ સ્વામી તથા અન્ય સંતો બાદ હાલ શ્રુતિવલ્લભ સ્વામી, ધ્યાનજીવન સ્વામી, આનંદકિશોર સ્વામી વગેરે સંતો વિચરણ કરીને સત્સંગપ્રવર્તન કરી રહ્યા છે. આ વિસ્તારમાં કોસાડી, કમલાપોર, ષઠવાવ, ઉન, ખંજરોલી, મધરકૂઈ, ગોદાવાડી, જામણકુવા, કોલાકૂઈ, અરેઠ, માંડવી જેવાં અંતરિયાળ ગામોમાં અને બીલીમોરા, અમલસાડ, વાંસદા અને ઉનાઈ - ચાર ક્ષેત્રોમાં ૨૧ હરિમંદિરો તેમજ કુટિર મંદિરોમાં અક્ષરપુરુષોત્તમ મહારાજ વિરાજમાન છે. જ્યારે ૧૦ મંદિરો નિર્માણાધીન છે.

### ■ આરોગ્ય સહાય :

ગણદેવી, વાંસદા, માંડવી અને વાલોડ તાલુકામાં ફરતા દવાખાના દ્વારા કુલ ૧૫૩ અંતરિયાળ ગામોના પછાત-ગરીબ લોકોની આરોગ્ય સેવા કરવામાં આવે છે.

- દૂર અંતરિયાળ વનવાસી વિસ્તાર સુધી પણ આ મંદિર દ્વારા સંતોએ વ્યસનમુક્તિ આંદોલન સતત ચાલુ જ રાખ્યું છે. ‘સબ દર્દી કી એક દવા-દારૂ.’ ઘરના બધા જ સભ્યો સાથે બેસીને દારૂ પીતા. વિદ્યાર્થીના ખિસ્સામાં પેનને બદલે ગુટખા-તમાકુની પડીકી જરૂર જોવા મળે. આવાં અનેક વ્યસનોની



નાગયૂઠથી રિબાતા આદિવાસીઓ આજે સત્સંગને પ્રતાપે નિર્વ્યસની થયા છે. લોકોમાં જાગૃતિ આવે તે હેતુથી વ્યસનમુક્તિના કાર્યક્રમો અને પ્રદર્શનો યોજવામાં આવે છે.

■ આદિવાસી અને અન્ય વર્ગને શિક્ષણ અને સંસ્કાર મળે અને વધુ સુખી બને તે માટે આ સંતોના વિચરણ દ્વારા માર્ગદર્શન મળે છે. જરૂરિયાતવાળા વિદ્યાર્થીઓને પુસ્તકો, શિષ્યવૃત્તિ, છાત્રાલય સગવડ (ઉકાઈ), અભ્યાસ વર્ગો, જીવન ઉપયોગી શિબિરો વગેરે શૈક્ષણિક સેવાઓ નિયમિતપણે ચાલુ જ છે.

■ આદિવાસીઓને વસ્ત્રો, ગરમ કપડાં, દવા, એમ્બ્યુલન્સ સેવા, મૅડિકલ કેમ્પ દ્વારા સહાય, અનાજ તથા અન્ય જરૂરિયાતો પણ આ મંદિર દ્વારા પહોંચાડવામાં આવે છે. વર્ષોથી મંદિરમાં નેત્રયજ્ઞો થતા રહ્યા છે.

### ■ શૈક્ષણિક સહાય અને લોકજીવન :

■ બી.એ.પી.એસ. સંસ્થા દ્વારા દર વર્ષે આ વિસ્તારના ૧૫૦ થી ૨૦૦ વિદ્યાર્થીઓને શૈક્ષણિક સહાય પ્રાપ્ત થાય છે. અભ્યાસમાં તેજસ્વી વિદ્યાર્થીઓના વિકાસ માટે આર્થિક સહાયના રૂપમાં શિષ્યવૃત્તિ, જરૂરિયાત મુજબ વ્યક્તિને ચોપડાં-નોટબુક વગેરે આપવામાં આવે છે. શ્રેષ્ઠ માર્ક્સ મેળવનારને ઈનામ આપી પ્રોત્સાહિત કરવામાં આવે છે.

■ જે આદિવાસીઓ માટે કાળા અક્ષર ભેંસ બરાબર હતા તે આદિવાસીઓનાં બાળકો પ્રમુખસ્વામી મહારાજના યોગમાં આવ્યા પછી વકીલ, જજ, ડોક્ટર, આચાર્ય, પ્રાધ્યાપક, પોલીસ ઈન્સપેક્ટર, સુપ્રિન્ટેન્ડન્ટ ઓફ પોલિસ કે અન્ય ઉચ્ચ પદ સુધી પહોંચ્યા છે. આ બધા જ સ્વીકારે છે કે, ‘અમે આ પદ સુધી પહોંચ્યા તેના મૂળમાં સત્સંગ અને બી.એ.પી.એસ. સ્વામિનારાયણ સંસ્થાની સત્સંગપ્રવૃત્તિ અને પ્રમુખસ્વામી મહારાજના આશીર્વાદ જ મુખ્ય છે.’

■ આ વિસ્તારોમાં અંધશ્રદ્ધા હોય જ તે સાહજિક છે. પણ બી.એ.પી.એસ.ના સત્સંગ અને સંત વિચરણથી તે લોકોમાં અંધશ્રદ્ધા દૂર થઈ. શ્રદ્ધાથી ભગવાનની પૂજા-મહાપૂજામાં જોડાઈ પોતાના સંકલ્પો પૂર્ણ થતા અનુભવે છે.

આદિવાસીઓમાં સાંસ્કૃતિક અને સામાજિક જાગૃતિ આવે તે માટે ૨-૩ મહિને જુદા જુદા ઉત્સવ-સમૈયાનું આયોજન થાય છે. જેમાં તેઓ ભેગા થઈ એકબીજાને મળે અને સત્સંગ કરે અને ભારતીય રીત-રિવાજ મુજબના ઉત્સવો ઊજવે છે.

### ■ સોનગઢ તાલુકો :

બ્રહ્મસ્વરૂપ યોગીજી મહારાજના આશીર્વાદ લઈને સને ૧૯૬૮માં સંતમંડળ સુરત જિલ્લાના સોનગઢ તાલુકાના ઉકાઈ ખાતે આવ્યું ત્યારથી અહીં સત્સંગપ્રવૃત્તિઓનો પ્રારંભ થયો છે. અહીં આદિવાસી ઉત્કર્ષ પ્રવૃત્તિઓના એક ભાગરૂપે સને ૧૯૭૬માં બી.એ.પી.એસ. છાત્રાલયના નિર્માણનાં શ્રીગણેશ થયાં. સને ૧૯૮૪માં પ્રમુખસ્વામી મહારાજે અહીં નૂતન મંદિર પ્રતિષ્ઠિત કર્યું અને થોડા સમય પછી આદિવાસી વિદ્યાર્થીઓ માટે સુવિધાસજ્જ છાત્રાલયનો પણ મંગલ આરંભ કર્યો. શુભદર્શન સ્વામી, બ્રહ્મપ્રસાદ સ્વામી વગેરે સંતો કુલ ૨૩ ગામોમાં વિચરણ દ્વારા સત્સંગ સાથે આદિવાસી ઉત્કર્ષની વિવિધ પ્રવૃત્તિઓ કરે છે. આ ગામડાંઓમાં કુલ ૧૨ સંયુક્ત સત્સંગ મંડળો, ૧૧ બાળ મંડળો, ૧ કિશોર મંડળ ગતિમાન છે. ૨૭૫૦ ઘરોમાં અન્નકૂટના પ્રસાદનું વિતરણ થાય છે.

■ સુરત તથા તાપી જિલ્લાના બારડોલી, મહુવા, માંડવી, વાલોડ, વ્યારા, સોનગઢ, ઉચ્છલ, નિઝર વગેરે આદિવાસી તાલુકાનાં ગામડાંઓના આદિવાસી બાળકોને શિક્ષણ સાથે સંસ્કાર પ્રાપ્ત થાય તે માટે પ્રમુખસ્વામી મહારાજની પ્રેરણાથી ૧૯૮૫માં ૨૦ વિદ્યાર્થીઓથી ઉકાઈ છાત્રાલયની શરૂઆત થઈ. વધુ વિદ્યાર્થીઓને લાભ મળે તે માટે ૧૯૮૭માં સંપૂર્ણ સુવિધાયુક્ત સુંદર છાત્રાલયનું નિર્માણ થયું છે.

■ હાલ, આ છાત્રાલયમાં ૧૨૦ બાળકો શિક્ષણ સાથે સંસ્કાર મેળવે છે. પ્રતિવર્ષે ૬૦ ગરીબ આદિવાસી બાળકોને ભોજન, આવાસ, ટ્યૂશન, કોમ્પ્યુટર, કરાટેનું શિક્ષણ વિનામૂલ્યે અપાય છે. સાથે સાથે બાળકોના સર્વાંગી વિકાસ માટે વિવિધ કોચિંગ તથા સ્પર્ધાઓ રાખી ઈનામ વિતરણ કરવામાં આવે છે. બાળકોમાં વિવિધ કલા-કૌશલ્યનો વિકાસ થાય તે માટે વિવિધ સાંસ્કૃતિક પ્રવૃત્તિઓ પણ કરવામાં આવે છે. છાત્રાલયના બાળકો દ્વારા દર વર્ષે વ્યસનમુક્તિ અભિયાન પણ થાય છે. તાજેતરમાં જ એપ્રિલ ૨૦૧૧માં બાળકોએ વ્યસનમુક્તિ અભિયાન કર્યું. જેમાં પરીક્ષાઓ બાદ ધોરણ-૧૦ના ૩૨ વિદ્યાર્થીઓએ પંદર દિવસમાં ૧૫ ગામોના ૨૭૨૨ ઘરોમાં કુલ ૪૬૭૧ વ્યક્તિઓની વ્યક્તિગત મુલાકાત લીધી. તેમાં ૧૫૧૬ વ્યક્તિઓને કંઠી ધારણ કરાવીને વ્યસન છોડાવ્યાં.

■ પ્રતિ વર્ષે આદિવાસી વિદ્યાર્થીઓને ગુજરાતનાં મંદિરો, દિલ્હી અક્ષરધામ, હરિદ્વાર-ઋષિકેશ, આગ્રા, મથુરા, ગોકુળ, વૃંદાવન અને જયપુરની યાત્રા કરાવાય છે.

■ છાત્રાલયના ૬૦ ગરીબ આદિવાસી વિદ્યાર્થીઓની જેમ છાત્રાલયમાં જ ધોરણ ૧૦ સુધી ભણ્યા બાદ તેજસ્વી ગરીબ આદિવાસી વિદ્યાર્થીઓને ઉચ્ચ શિક્ષણની સુવિધા કરી આપવામાં આવે છે. આ વિદ્યાર્થીઓ પૈકી એન્જિનિયર, ડેન્ટલ સર્જરી તથા એમ.બી.બી.એસ.નો અભ્યાસ કરી કારકિર્દી બનાવી રહ્યા છે.

■ અદ્યતન સુવિધાઓથી સજ્જ આ છાત્રાલયમાં, વિદ્યાર્થીઓ સંસ્કાર સાથે પોતાની કારકિર્દી ઘડે છે. જિતેન્દ્ર ગામીત નામનો આદિવાસી વિદ્યાર્થી આ છાત્રાલયમાં આવ્યો ત્યારે તેને બટાકા અને ચીકુ વચ્ચેના ભેદની પણ ખબર નહોતી, તે આ છાત્રાલયમાં આવીને આજે ‘માસ્ટર ઓફ કોમ્પ્યુટર એપ્લિકેશન’(M.C.A.)ના નિષ્ણાત તરીકે ઉજ્જવળ કારકિર્દી પામ્યો છે. એટલું જ નહીં, અહીં રાષ્ટ્રીય કક્ષાએ ‘નેશનલ ઇન્સ્ટિટ્યૂટ ઓફ ફિઝિક્સ ટીચર્સ એસોસિએશન’, કોઈમ્બતુર દ્વારા લેવાતી ફિઝિક્સની પરીક્ષામાં પ્રથમ ૧૦માં તેણે સ્થાન મેળવ્યું છે.

ઘાસિયા મેઢાનો મોહન ચૌધરી નામનો વિદ્યાર્થી ૧૩ વર્ષની ઉંમરે છાત્રાલયમાં દાખલ થયો ત્યારે શરૂઆતમાં જ તેને જમણા હાથે જમવા માટે કહેવામાં આવ્યું. તેનાથી તે એટલો બધો ગભરાઈ ગયો કે રાત્રે એક ઝાડ પર ચડી ગયો. ઘણી શોધ કરવા છતાં મળ્યો નહીં. પરંતુ રાત્રે લઘુશંકા કરવાથી સૂકાં પાંદડાં ખખડ્યાં અને એમ તેની ભાળ મળી. એ કક્ષાની અબુધ દશામાંથી આગળ વધીને છાત્રાલયના વાતાવરણમાં ઉજ્જવળ તક મેળવીને આ વિદ્યાર્થી આજે એમ.પી.એડ. થઈને પોતાની તેજસ્વી પ્રતિભાનું દર્શન કરાવી રહ્યો છે.

■ આ છાત્રાલયના વિદ્યાર્થીઓમાંથી કેટલાયે એમ.એ., એલ.એલ.બી. કે એન્જિનિયરિંગ, કોમ્પ્યુટર કે ફાર્મસીના ઉચ્ચ અભ્યાસક્રમો દ્વારા પોતાની કારકિર્દી

ઘડી છે. આવાં તો કેટલાંયે ઉદાહરણો છે. ખૂબ કઠિનાઈઓ અને સંઘર્ષ વેઠીને સંતો અને નિષ્ઠાવાન કાર્યકર્તાઓ આ છાત્રાલય દ્વારા આદિવાસીઓને ઉત્તમ પ્રેરણાઓ પીરસી રહ્યા છે. અત્યાર સુધી આ છાત્રાલયમાંથી ૧૦૫૭ બાળકોએ ભણીને પોતાની કારકિર્દી ઉજ્જવળ બનાવી છે. ઉપલબ્ધ માહિતી અનુસાર : ગ્રેજ્યુએટ ૧૦૮, એન્જિનિયરો ૩૭, પી.ટી.સી. ૧૪, આઈ.ટી.આઈ. ૫૨, લેક્ચરર-પ્રોફેસર ૨, બી.ડી.એસ. (ડન્ટલ) ૧, અને એમ.બી.બી.એસ. ૧ વગેરે વિદ્યાશાખાઓમાં વિદ્યાર્થીઓએ ઉજ્જવળ કારકિર્દી ઘડી છે.

### ■ અત્ય પ્રવૃત્તિઓ :

- ઉકાઈ મંદિરે છેલ્લાં ચાર વર્ષથી પૂનમની સભા થાય છે. જેમાં ગામડાંનાં ૪૦૦ બાઈ-ભાઈ હરિભક્તો લાભ લે છે.
- સત્સંગ પ્રવૃત્તિ સાથે અનેકવિધ સામાજિક પ્રવૃત્તિઓ થાય છે. છાત્રાલયના બાળકો દ્વારા નિયમિતરૂપે વૃક્ષારોપણ, હોસ્પિટલોમાં દર્દીઓ માટે પ્રાર્થના, વ્યસનમુક્તિ અભિયાન થાય છે.
- પ્રતિ વર્ષે ગરીબોને વસ્ત્રવિતરણ કરવામાં આવે છે.
- તાપી નદીમાં આવેલ પૂર હોનારત સમયે આજુબાજુનાં ગામડાંઓમાં ફૂડપેકેટ તથા વસ્ત્રોનું વિતરણ કરવામાં આવ્યું.
- આરોગ્ય ક્ષેત્રે સેવા કરવા માટે છેલ્લાં બે વર્ષથી ‘ફરતું દવાખાનું’ કાર્યરત છે, જેના દ્વારા વર્ષે હજારો દર્દીઓની સારવાર કરી નિઃશુલ્ક દવા અપાય છે. છેલ્લા દોઢ વર્ષમાં ત્રણ નેત્રરોગ નિદાન યજ્ઞ દ્વારા ૫૭૩ દર્દીઓની સારવાર કરી ૨૯૮ દર્દીઓને મફત ચશમાં વિતરણ કર્યું છે. તથા ૧૮ દર્દીઓને મફત મોતિયાનું ઓપરેશન કરી નેત્રોને નવું જીવન અપાયું છે.

પંચમહાલ અને દાહોદ જિલ્લામાં આદિવાસી ઉત્કર્ષ પ્રવૃત્તિ સને છેલ્લા સાડા ત્રણ દાયકાથી સતત અભિવૃદ્ધિ પામતી રહી છે. પરંતુ તેને વિશેષ વેગ મળ્યો, સને ૧૯૮૫ પછી. (આ વિસ્તારની આદિવાસી ઉત્કર્ષ પ્રવૃત્તિઓની વિશેષ વિગતો આ અંકમાં અન્યત્ર શામેલ છે.)

- આ જિલ્લાઓમાં બી.એ.પી.એસ. સ્વામિનારાયણ સત્સંગના કુલ ૧૨ ક્ષેત્રોમાં સત્સંગ પ્રવૃત્તિ ગતિમાન છે. એ પૈકી ૫૦૦થી વધુ ગામોમાં સંતવિચરણ થાય છે. કુલ ૨૨૦ ગામોમાં બી.એ.પી.એસ. સ્વામિનારાયણ સત્સંગમંડળોમાં હજારો આદિવાસી પરિવારો સત્સંગ દ્વારા સુખાકારી માણે છે. ૨૨૦ સંયુક્તમંડળોને સમાંતર ૨૨૦ મહિલામંડળો પણ ગતિમાન છે.

### ■ આ વિસ્તારમાં થયેલી લોકસેવાઓ :

આ વિસ્તારના આદિવાસી લોકોનું જીવનધોરણ ઊંચું આવે તે માટે પ્રમુખસ્વામી મહારાજની પ્રેરણાથી બી.એ.પી.એસ. સ્વામિનારાયણ સંસ્થા દ્વારા નીચેનાં વિવિધ આયોજનો કરવામાં આવ્યાં છે.

- દુષ્કાળ રાહતકાર્યો, વસ્ત્ર વિતરણ, પુરરાહતકાર્ય, સુખડી વિતરણ, દૂધ વિતરણ, ફરતું દવાખાનું, છાશ વિતરણ, પાણી વિતરણ, બાળ સંસ્કારકેન્દ્ર, બાળ આરોગ્ય-શિક્ષણ, રમકડાં વિતરણ, શિક્ષણ, બાલિકા સંસ્કારકેન્દ્ર, સ્ત્રી આરોગ્ય-શિક્ષણ, રહેણીકરણી અને વિજ્ઞાન, ખેતી, વ્યસનમુક્તિ, વૃક્ષારોપણ.
  ૧. સને ૧૯૭૫માં દુષ્કાળ-રાહતકાર્યમાં કુલ ૭૮ ગામોમાં સુખડી વિતરણ, છાશ વિતરણ અને વસ્ત્ર વિતરણ કરવામાં આવ્યું.
  ૨. સને ૧૯૮૩માં કુલ ૫૪ ગામોમાં અનાજ વિતરણ તથા વસ્ત્રવિતરણ કરવામાં આવ્યું.
  ૩. સને ૧૯૮૩માં કુલ ૮૦ ગામોમાં બાળકોને તથા મોટાઓને વસ્ત્રવિતરણ કરવામાં આવ્યું.
  ૪. બાળકોને યોગ્ય પોષણ પ્રાપ્ત થાય તે હેતુથી સને ૧૯૮૪માં કુલ ૨૦ ગામોમાં બાળકોને દૂધ આપવામાં આવ્યું.
  ૫. ઉનાળો લંબાતાં પાણીની મુશ્કેલી વધી જતાં સંસ્થા દ્વારા પાણી ગામડાંઓમાં પહોંચાડવામાં આવે છે. સને ૧૯૮૩માં કુલ ૧૦ ગામોમાં ટેન્કરો દ્વારા પીવાનું પાણી પહોંચાડવામાં આવ્યું હતું.
  ૬. સને ૧૯૮૪માં આવેલા પૂર વખતે જાંબુઘોડા તાલુકાના વિસ્તારોમાં અનાજ વિતરણ, વસ્ત્રવિતરણ કરવામાં આવ્યું હતું.

# યોગીજી મહારાજ, આપણે અને ક્રોધની જવાળાઓ

છેલ્લાં પાંચ હજાર કરતાં વધુ વર્ષોનો ઇતિહાસ ભારતનાં પુરાણોમાં ભંડારાયો છે. એ પ્રાચીન ઇતિહાસનાં અનેક પૃષ્ઠોમાં માનવ નબળાઈઓની પણ કંઈક વાતો ભંડારાઈ છે. તેમાંય ક્રોધની આગ સૌથી વધુ ભડકતી નિરખાય છે. દુર્વાસા, દુર્યોધન કે જયવિજય જેવાં અનેક પ્રાચીન પાત્રોના ક્રોધ અને રોષ-વેરની આગ કેટલો વિનાશ કરી શકતી હતી - તે પુરાણપ્રસિદ્ધ છે. એડોલ્ફ હિટલરથી લઈને આધુનિક આંતરકવાદીઓની રોષ-ક્રોધની ભભૂકતી જવાળાઓએ જગતની કેવી દુર્દશા કરી છે - તે ઇતિહાસ પ્રસિદ્ધ છે. ઘરઘરમાં રોજ ભડકતી ક્રોધની જવાળાઓએ લાખો પરિવારોમાં કલેશ-કંકાસની કેવી વિકૃતિ પેદા કરી છે તે જગપ્રસિદ્ધ છે. કોર્ટ-કચેરીઓ, પોલીસથાણાંઓ, જેલોનાં બંદીખાનાંઓમાં ઠેર ઠેર ક્રોધની ભડકતી આગમાં ભુંજાયેલા ચહેરાઓ ઊભરાય છે. કેટલાં ખૂન, કેટલા હુમલાઓ, કેટલી આત્મહત્યાઓ, કેટલા ગુન્ડાઓના મૂળમાં ક્રોધની બદભૂ ગંધાય છે.

માનવજાતને અશાંત કરનારા આ ક્રોધની કેવી છે એનેટોમી ?

શું ક્રોધની આ ભડકતી જવાળાઓને શાંત કરી શકાય ?

ક્યાં છે એવા આદર્શ મહાપુરુષ, જેમને જીવનભર ક્રોધની જવાળાઓ ક્યારેય સ્પર્શી ન હોય ?

એવા સવાલોના પ્રત્યુત્તર સાથે, સ્વામિનારાયણ પ્રકાશનો આ અંક, હવે પછીના પૃષ્ઠોમાં યોગીજી મહારાજની સ્મૃતિઓ લઈને આપની સમક્ષ આવે છે. યોગીજી મહારાજને ક્યારેય ક્રોધની જવાળાઓ સ્પર્શી નહોતી, આજે એમના સ્વરૂપ સમા પ્રમખસ્વામી મહારાજ સૌને સદા શીતળતાનો અનુભવ કરાવે છે. આપણે એમાંથી પ્રેરણા લઈ શકીએ ? યોગીના મારગે આપણે થોડાં ડગલાં પણ માંડી શકીએ ? એ સવાલ જાતને પૂછવો જ રહ્યો. અને જવાબ પણ જાતે જ આપવો રહ્યો.

પૂર્ણ પુરુષોત્તમ ભગવાન શ્રી સ્વામિનારાયણે નિષ્કોધી થવાનો આદેશ પોતાના સમાજને આપ્યો, તેટલું નહીં, અનેકની ક્રોધ-વૃત્તિઓને તેમણે હણી દીધી હતી. અનેક હિંસક લોકોનું જીવન-પરિવર્તન કરીને તેમણે તેમને શાંતિ અને કરુણાથી છલકાવી દીધા હતા. એ જ પરંપરામાં અક્ષરબ્રહ્મ ગુણાતીતાનંદ સ્વામી, બ્રહ્મસ્વરૂપ શાસ્ત્રીજી મહારાજ, બ્રહ્મસ્વરૂપ યોગીજી મહારાજ અને આજે પ્રગટ બ્રહ્મસ્વરૂપ પ્રમુખસ્વામી મહારાજ અસંખ્ય લોકોનું જીવનપરિવર્તન કરી રહ્યા છે. એમના શરણે જઈને આપણે પણ આપણા સ્વભાવનું પરિવર્તન ન કરી શકીએ ?

૧૧૮મી યોગીજયંતીએ, ‘સ્વામિનારાયણ પ્રકાશ’નો આ અંક એમને અર્ધ્ય અર્પિને ક્રોધની જવાળાઓને શાંત કરવાની પ્રેરણા આપવા આપની સમક્ષ પ્રસ્તુત થાય છે.

આશા છે આ અંક આપણાં તન-મન-આત્માને નવી ચેતનાથી ભરી દેશે.

## યોગીજી મહારાજ જેમને ક્રોધની જવાળાઓ સ્પર્શી શકતી નથી

■ સા ઘુ ઈ શ્ચ ર ય ર ણ દા સ

આધ્યાત્મિક માર્ગમાં યોગીજી મહારાજના જીવનમાંથી આપણને અનેક પ્રેરણાઓ મળે છે. તેમના જીવનમાં એવા કલ્યાણકારી ગુણ અને એવી પ્રેરણાઓ ભરી હતી કે આપણે સતત આધ્યાત્મિક માર્ગદર્શન પામીને જીવનમાં આગળ વધી શકીએ.

તેમનું એક અતિ પ્રિય કીર્તન હતું : ‘હાં જી ભલા સાધુ...’ તે કીર્તનમાં મુક્તાનંદ સ્વામીએ સંતનાં બધાં સૂક્ષ્મ લક્ષણો સારી રીતે વર્ણવ્યાં છે. યોગીજી મહારાજ ઘણી વખત ભાવમાં આવીને ડોલતાં ડોલતાં આ કીર્તન ગાતા. ઘણી વાર તેઓ કહેતા : ‘આ અમારી માલિકીનું કીર્તન છે.’ એટલે કે આ કીર્તનની એકે એક પંક્તિ અને એકે એક શબ્દ તેમના જીવનમાં ચરિતાર્થ દેખાય છે. એમાં એવું એક લક્ષણ પણ મુક્તાનંદ સ્વામીએ વર્ણવ્યું કે ‘કબહુ ક્રોધ ન ઊપજે, સો સાચા વૈરાગ્ય.’

સામાન્ય રીતે માણસને ક્રોધ ગમે ત્યારે આવી જાય છે. ક્રોધ આપણો મોટો અંતઃશત્રુ છે. ભગવાન સ્વામિનારાયણે પણ વચનામૃતમાં કહ્યું : ‘ક્રોધયુક્ત પ્રકૃતિ એ દુષ્ટનો ધર્મ છે.’ આ બધી વાતો આપણે સાંભળીએ, છતાં પણ ક્રોધ ક્યારે આવે અને આગ ભભૂકી જાય તેની ખબર પણ પડતી નથી. ક્યારેક આપણે બહાર પ્રગટ ન કરીએ તો મનમાં તો વ્યાપી જ જાય છે.

યોગીજી મહારાજના જીવનમાં પ્રત્યક્ષ અનેક વાર અનુભવાયું છે કે ક્રોધનો અતિ સૂક્ષ્મ અંશ પણ ક્યારેય જોવા મળે નહીં. અખંડ આનંદ ! એ જ એમની સ્વાભાવિકતા.

જ્યાં સામાન્ય રીતે કોઈ પણ માણસ તપી જાય ત્યાં યોગીજી મહારાજને ક્રોધનો અંશ પણ સ્પર્શ નહીં. કેટલાય નજરે જોયેલા, અનુભવેલા પ્રસંગો યાદ આવે છે.

અમે ૧૯૬૮માં યોગીજી મહારાજ સાથે કલકત્તા ગયેલા. ત્યાં અમારો ઉતારો અજમેરા દલપતભાઈને ત્યાં હતો. યોગીજી મહારાજમાં એવાં સ્વાભાવિક ભક્તિ-મહિમા હતાં કે જે શહેરમાં મંદિરો હોય, જૂની સંસ્થાનું સ્વામિનારાયણ મંદિર હોય તો ત્યાં અવશ્ય દર્શન કરવા જાય જ. કલકત્તામાં પણ વર્ષોથી જૂનું સ્વામિનારાયણનું મંદિર છે. યોગીજી મહારાજ કહે, ‘ચાલો આપણે તેનાં દર્શન કરવા જવું છે.’ એટલે અમારી સાથે મોટા મોટા હરિભક્તો, વૈષ્ણવ સમાજના અગ્રણી હરિભક્ત નંદલાલકાકા, ચીમનભાઈ દાણી અને પ્રતિષ્ઠિત વૈષ્ણવો અને ભક્તો અમારી સાથે હતા. સૌ સાથે અમે મંદિરે દર્શન ગયા. યોગીજી મહારાજ તો ગમે તેવું નાનું મોટું મંદિર હોય તોય દર્શન કરતાં એકદમ ભાવમાં આવી જાય. અહીં પણ નાનું એવું સિંહાસન, મહારાજની મૂર્તિઓનાં ખૂબ પ્રેમથી દર્શન કર્યાં. પછી ત્યાં નાના એવા એક સભામંડપમાં એક સંત બેઠેલા જોયા. તેમને ત્યાં જોયા એટલે યોગીજી મહારાજ એમની બાજુમાં પ્રેમથી જય સ્વામિનારાયણ કહેવા ગયા, પરંતુ ગયા એટલે એમણે તરત આસન ખેંચી લીધું. એટલે યોગીજી મહારાજ ત્યાં નીચે બેસી ગયા. અને



કોઈએ યોગીબાપાને વાત કરી હતી કે આ જે અહીંયાં સંત છે તે જૂનાગઢના છે. યોગીબાપાને જૂનાગઢની વાત આવે એટલે એકદમ ભાવમાં આવી જાય. આમ રસ પડી જાય એટલે બાજુમાં બેસી એમને પૂછ્યું કે 'તમે કયા મંડળના ? શું તમારું નામ ?' કારણ કે કોઈને કોઈ મંડળ તો હોય જ. કાં તો બાલમુકુંદ સ્વામીનું મંડળ હોય કે નારણદાસ સ્વામીનું મંડળ હોય કે કાં તો માધવચરણદાસ સ્વામી અથવા માધવપ્રિયદાસ સ્વામી જેવા જૂનાગઢના મોટા મોટા સદ્ગુરુનું મંડળ હોય એટલે પૂછવા ગયા તો સ્વામીએ એવો છણકો કર્યોને કે બધા જોઈ રહ્યાં. મોટા મોટા હરિભક્તો, વૈષ્ણવો અમારી સાથે હતા એમને થયું કે આ યોગીજી મહારાજ જેવા વેદોક્ત જ્ઞાનવેદક મહાન સંતની પણ મર્યાદા રાખતા નથી અને આવું આપમાન કરે છે ? અમારી સાથે મણિભાઈ મહેતા કરીને કલકત્તાના આપણા હરિભક્ત હતા. એકદમ જુવાન, સાધન સંપન્ન સુખી અને છ ફૂટ ઊંચા, કદાવર શરીર. યોગીબાપાને વિશે અનન્ય હેત અને જ્યારે એમણે આવું અપમાન થતું જોયું ત્યારે તેઓ એકદમ ગુસ્સે થઈ ગયા કે હમણાં કંઈકને કંઈક કરી નાંખું. કંઈ વધારે પડતાં આવેશમાં આવી જાય, તો ખોટું દેખાય. એમ વિચારી કેટલાક હરિભક્તો તેમને ઊંચકીને નીચે લઈ ગયા. યોગીજી મહારાજ તો શાંતિથી નીચે ઊતરી ગયા, ગાડીમાં બેસી ગયા અને અમે સૌ ઉતારે આવી ગયા.

ઉતારે તેઓ શાંતિથી બેઠા હતા. મુંબઈવાળા ઈશ્વરભાઈએ સ્વામીને વાત કરી કે 'બાપા ! બહુ ખોટું થયું. આપણે દર્શન કરવા ગયા અને સાધુએ અપમાન કર્યું.' યોગીજી મહારાજ આવા શબ્દો સાંભળતા જ નહીં ! આવી કોઈ વાત હોય તે ગૌણ કરે, કોઈના અવગુણની કે આવી કોઈ મોળી વાતને કાન જ ન ધરે. એમની સ્વાભાવિકતા મુજબ યોગી બાપા એકદમ આમ પલંગની ધાર પર આવી ગયા. પછી ધીર ગંભીર પ્રસન્ન મુદ્રામાં હળવે સ્વરે સૌને કહેવા લાગ્યા : 'જુઓ, આપણે શાના માટે ગયા'તા ? આપણે તો દર્શન માટે ગયા'તા, તે દર્શન તો આપણને થઈ ગયાં ! એ જ સંભારવાનું, બીજું કાંઈ નહીં સંભારવાનું. બીજું જે કંઈ થયું હોય એ દાટી દેવાનું ! સંભારવાનું નહીં ! એમના મુખારવિંદની ઉપર એટલી બધી પ્રસન્નતા હતી કે સૌને આશ્ચર્ય થયું. ઘોર અપમાન થયું, આવો અસભ્ય તિરસ્કાર કર્યો, આટલા બધાની હાજરીમાં આવી ઘટના બની, પરંતુ યોગીજી મહારાજના મુખ પર એની કોઈ રેખા સુદ્ધાં નહીં ! કોધની લકીર પણ એમના મુખારવિંદ પર જોવા મળી નહીં, એકદમ શાંત ! ભલભલા તપી ગયેલાને એમની આ સ્થિતિએ ઠારી દીધા ! તો આવા સંજોગોમાં જોયું છે કે કોધ એમની નજીક પણ ફરકી શકે જ નહીં, એવું શીતળ એમનું વ્યક્તિત્વ હતું.

તેઓને એ અંગે પૂછીએ તો તેઓ કહેતા : 'અમારી દુકાનમાં કોધ છે જ નહીં ! અમારી દુકાનની અંદર બીજો ઘણો બધો માલ છે. સત્સંગના કલ્યાણકારી ગુણ, ધર્મ, જ્ઞાન, વૈરાગ્ય, ભક્તિ છે, પણ કોધ નામની કોઈ વસ્તુ જ નથી.'



અમે યુવકો યોગીજી મહારાજ સાથે જૂનાગઢ ગયા હતા. પદ-પગની સાલ હતી. યોગીજી મહારાજ જૂનાગઢ મંદિરમાં જાય એટલે ગુણાતીતાનંદ સ્વામીમાં સાંગોપાંગ તદ્રૂપ થઈ જાય. જૂનાગઢમાં ગુણાતીતાનંદ સ્વામીની પ્રસાદીની વસ્તુઓ અને સ્થળોનાં દર્શન કરવાનો એમનો સહજ ક્રમ. બધે એવા પ્રેમથી દર્શન કરે કે ખોવાઈ જાય ! આવી રીતે દર્શન કરીને અમે મુખ્ય ચોકમાંથી પસાર થતા હતા. ત્યાં કેટલાક નાના નાના સંતો હતા. દસ-બાર વર્ષના નાના નાના પાર્ષદોને કોઈએ ચડાવેલા, એટલે અમે ત્યાંથી નીકળ્યા ત્યારે રસ્તામાં ધૂળમાંથી કાંકરીઓ વીણીને યોગીજી મહારાજને અને અમને મારવા લાગ્યા. 'એ બંડિયા... એ બંડિયા...' એમ કરીને બધા તિરસ્કાર કરે અને કાંકરીઓ મારે. આવું તો કોણ ખમી શકે ? સાથે યુવકો હતા એ તો અકળાઈ ગયા. પણ યોગીજી મહારાજ બધાનો આમ હાથ ખેંચે, 'આ તો બધા જૂનાગઢના છે. આ ગુણાતીતાનંદ સ્વામીના પ્રસાદીના કે'વાય. આપણે ઈ કરે ઈ કંઈ નઈ જોવાનું, કંઈ બોલવાનું પણ નહીં.' એમ કહીને અમને બધાને સ્તબ્ધ કરી દીધા. કોઈને સહેજ પણ કોધની ચટકી આવી હશે, એ બધાને એમણે શાંત પાડી દીધા. એ બાલીશ લોકો કોઈએ શિખવાડેલું એ મુજબ બંડિયા બંડિયા કહીને મારતા હતા, પણ યોગીજી મહારાજના મનમાં કેવી મહિમાની વાત કે આ તો જૂનાગઢના, ગુણાતીતાનંદ સ્વામીના, પ્રસાદીના ! એ સંતો આપણને કાંકરી મારે કે કાંકરા મારે કે ધૂળ નાખે, ગમે તે કરે, બધું જ દિવ્ય !

એમણે તો આવું અનંત વાર કેટલી જગ્યાએ આ બધું સહન કરેલું. પરંતુ એમને મન તેની કોઈ અસર માત્ર નહીં ! આવા પ્રસંગો બને ત્યારે યોગીજી મહારાજ કોઈ દિવસ એની ચર્ચા પણ ક્યારેય કરે નહીં ! જાણે કે કંઈ બન્યું જ નથી ! આવી વાતોને વિસારી દઈને બસ મહિમા, મહિમા ને મહિમાનું જ ગાન ! એ જ એમના જીવનની લાક્ષણિકતા જોવા મળતી.



અમારે ઘણી વાર યોગીજી મહારાજ સાથે જૂના મંદિરોમાં દર્શન કરવાનું થાય. ગોંડલથી નીકળ્યા હોઈએ, જૂનાગઢ જતા હોઈએ તો રસ્તામાં જેતપુર આવે. સાડા દસ, અગિયાર વાગ્યા હોય તો યોગીજી મહારાજ અવશ્ય જેતપુર મંદિરમાં દર્શન કરવા સારુ જાય. પણ ત્યાં કોઈકને ખબર પડે કે 'જોગી આવ્યા છે' તો ઠાકોરજીનાં બારણાં બંધ કરી દે ! પણ યોગીજી મહારાજના મુખ પર એક લકીર પણ ન બદલાય !



સન ૧૯૭૦માં યોગીજી મહારાજ નૈરોબી પધાર્યા હતા. તે સમયે પરદેશમાં નાના બાળકો ઓટોગ્રાફ બુક લઈ આવે અને બધા સંતોની સહી કરાવે. એક બાળક પોતાની સુંદર ઓટોગ્રાફ બુકમાં યોગીજી મહારાજના હસ્તાક્ષર કરાવવા આવ્યો. સ્વામીશ્રીએ તેની વિનંતીને સરળતાથી સ્વીકારી લીધી અને તેની ઓટોગ્રાફ બુકમાં આશીર્વાદ લખી આપ્યા. તેનાથી એ બાળક એટલો બધો આનંદમાં હતો કે સૌને કહ્યા કરે, યોગી બાપાએ મને સહી કરી આપી !

એ અરસામાં એવું બન્યું કે નૈરોબીમાં બીજા એક મંદિરમાં બીજા કોઈ એક મોટા સંત આવેલા. પોતાના કોઈ સગાવહાલાની સાથે એમની પાસે બાળક ગયો અને તેમને પણ ઓટોગ્રાફ બુકમાં સહી કરી આપવા વિનંતી કરી. એ જાણીતા સંતે ઓટોગ્રાફ બુક હાથમાં લઈને જોઈ તો પહેલા જ પાના પર યોગીબાપાની સહી જોઈ. અંગત રાગદ્વેષને કારણે એમને આ ગમ્યું નહિ.

એમણે એ બાળકને પૂછ્યું, 'તારે મારી સહી કરાવવી છે ?'

બાળકે રાજી થઈને કહ્યું : 'કરી આપોને !'

યોગીજી મહારાજે કરેલી સહીનું પાનું બતાવીને એ સંત બાળકને કહે, 'પહેલાં આ સહીનું પાનું હું ફાડી નાખું, પછી જ હું તને આમાં સહી કરી આપું.

આ સહી તારી બુકમાં છે તો હું સહી નહીં કરું.’

બાળક ઘડીક હેબતાઈ ગયો. પણ તેણે મક્કમતાથી કહ્યું : ‘ના, આ તો યોગીબાપાની સહી છે એ ન ફાડવા દઉં.’ એમ કહીને એ બાળકે ઓટોગ્રાફ બુક પાછી લઈ લીધી અને ઘરે પાછો જતો રહ્યો.

યોગાનુયોગ તેને ફરીથી મંદિરમાં આવવાનું થયું. ભોજન બાદ યોગીજી મહારાજની બપોરની કથા ચાલતી હતી. કથા બાદ એ બાળકે પૂર્વેનો આખો પ્રસંગ વર્ણવીને યોગીજી મહારાજને કહ્યું : ‘બાપા ! મને એ સંતે કહ્યું કે યોગીજી મહારાજની સહીનું પાનું હું ફાડી નાખું પછી જ હું સહી કરી આપું. પછી મેં તો ના પાડી.’

એકદમ નિખાલસતાથી યોગીજી મહારાજ એ બાળકને કહેવા લાગ્યા, ‘એમને ફાડવા દેવું હતું ને ! અમે તમને ફરીવાર સહી કરી આપત. આપણી સહીનો કાગળ ફાડી નાખત તો એમાં આપણને શું વાંધો આવવાનો હતો ! પણ તમને એમની સહી મળી જાત ને ! અમે તમને ફરીવાર બીજા કાગળ ઉપર સહી કરી આપત.’

સૌ આ સાંભળીને આશ્ચર્યચકિત થઈ ગયા.

આવા સંજોગોમાં કોઈપણ માણસ પોતાના પરનો કાબૂ ખોઈ બેસે, પરંતુ યોગીજી મહારાજને કોધની લકીર સુદ્ધાં નહીં ! પૂર્ણ નિર્વેરતા ! પોતાના અસ્તિત્વનું કોઈ સભાનપણું જ નહિ ! પોતાનો કોઈ વિચાર જ નહીં ! આ પ્રસંગ બન્યા પછી પણ તે અંગે કોઈ વાત કે ચર્ચા પણ નહીં !

આવા નાના મોટા અનેક પ્રસંગોમાં એમનું નિર્વેરપણું, એમનું અકોધપણું, એમની શીતળતા વગેરે અનુભવ્યું છે.

સને ૧૯૬૦-૬૮માં યોગીજી મહારાજ આફ્રિકામાં વિચરણ કરતા હતા. પૂર્વ આફ્રિકાના મ્વાન્ઝા, શિયાંગા, ડોડોમા અને ટબોરા વગેરે ગામડે ગામડે સ્વામીશ્રીનું વિચરણ ચાલી રહ્યું હતું. હું તે વખતે યોગીજી મહારાજની સેવામાં યુવક તરીકે સાથે હતો. તે વખતે એક દ્વેષી વ્યક્તિએ હરિભક્તોમાં અને બીજા લોકોમાં યોગીજી મહારાજ વિરુદ્ધ પ્રચાર કરવા માંડ્યો હતો. આફ્રિકાના ઘણા અગ્રણી હરિભક્તો પણ અમારી સાથે હતા. અમારો નિત્યક્રમ એવો રહેતો કે અમે જે ગામમાં જઈએ ત્યાં ઉતારા વગેરે કરીને હરિભક્તો ગામમાં ગુજરાતીઓને ઘરે ઘરે મળવા જાય, એ બધાને સ્વામીશ્રીના આગમનની વાત કરે, અને સાંજની સત્સંગ સભા માટે નિમંત્રણ આપે.

પણ અમે જ્યાં જઈએ ત્યાં પેલી દ્વેષી વ્યક્તિએ લોકોમાં પહેલેથી યોગીજી મહારાજ, શાસ્ત્રીજી મહારાજ વિશે જેમ તેમ દ્વેષની વાતો ફેલાવી દીધી હોય. એક સવારે અમે ટબોરા ગામે પહોંચ્યા. બપોર પછી ક્રમ મુજબ બધા હરિભક્તો ગામમાં સૌને મળવા ગયા. ઘણા પરિચિતો હતા. કેટલાક લોકો સાથે તેમને વેપારી સંબંધો હતા. એ બધાને યોગીજી મહારાજના સમાચાર આપવા માટે જ્યાં જ્યાં ગયા ત્યાં ત્યાં આગળથી વિરોધી પત્રિકાઓ પહોંચી ગઈ હતી. દરેકના ઘરે પોસ્ટબોક્સમાં પત્રિકાઓ પોસ્ટ થઈ ગઈ હતી. અધૂરામાં પૂરું, છાપામાં પણ તેમણે દ્વેષભરી વાતો છપાવી હતી. હરિભક્તો બધાને મળવા જાય ત્યારે એ બધાનો પ્રતિભાવ મળતો : ‘તમારા વિષેની આ પત્રિકા અમારે ત્યાં આવી છે, એમાં તો તમારા ગુરુ વિષે ખૂબ ખરાબ લખ્યું છે. શું છે બધું આ ?’

ઠેર ઠેર સાચી વાત સમજાવી સમજાવીને થાકેલા હરિભક્તો અંતે બહુ અકળાઈ ગયા. ટબોરામાં સાંજે લગભગ પાંચ-છ વાગે યોગીજી મહારાજ ટપાલ લખતા હતા તે વખતે હરમાનભાઈ, સી.એમ. પટેલ વગેરે પાંચ-સાત હરિભક્તો તેમની પાસે આવ્યા. સૌ એકદમ ધુંધવાયેલા હતા. તેમની પાસે છાપાંઓ અને પત્રિકાઓનો થોકો હતો. એ બધું બતાવીને સૌએ સ્વામીશ્રી આગળ આકોશ ઠાલવતાં તેઓને કહ્યું કે ‘આ માણસ આપણને કેટલો ત્રાસ કરે છે ! ઠેક ઠેકાણે કેવી રમખાણ મચાવે છે ! આપણે આનું કંઈક કરવું જ પડશે. એના પર કેસ કરીએ, એના વીજા રદ કરાવી દઈએ, એને પોલીસમાં પકડાવી દઈએ.’ સૌએ ખૂબ ઊકળાટ કાઢ્યો.

ખરેખર, વાત એટલી હદે વણસી હતી કે કોઈપણ માણસ ઉકળી જ ઊઠે, કોઈને પણ કોધ આવી જાય.

પરંતુ આ વાતો સાંભળતાં યોગીજી મહારાજ બિલકુલ શાંત હતા. આ વાતો દરમ્યાન પણ એમનું ટપાલ લખવાનું યથાવત્ ચાલતું રહ્યું. શાંતિથી બધું સાંભળ્યા પછી તેઓ કહે, ‘જુઓ, આ પત્રિકામાં જે કાંઈ લખ્યું છે, તે ભલે લખ્યું, પણ આપણે વિચારવાનું કે પત્રિકામાં જે લખ્યું છે એવું આપણે કરીએ છીએ ? એવા આપણે છીએ ? આપણે તો એવું કાંઈ કરતા નથી. આપણે એવું ન કરતા હોઈએ તો આપણે શું કામ ચિંતા કરવી જોઈએ ? છતાં આપણે એમ પણ વિચારવાનું કે આ પત્રિકામાં જે લખ્યું છે એવું ભવિષ્યમાં પણ ક્યારેય ન કરીએ, આપણે આપણા નિયમ-ધર્મમાં રહીએ અને સત્સંગ-ભક્તિ તે બધું બરાબર કરીએ એ માટે આપણને અગાઉથી ભગવાને ચેતવ્યા છે. માટે પત્રિકામાં ભલે ને ગમે તે લખ્યું હોય, એની ચિંતા શું કામ કરવી ? આપણે કાંઈ જ કરવાનું નથી, એ ભલે જેમ કરવું હોય એમ કરે, આપણે તેની સામું નહિ જોવાનું. આપણે આપણું કાર્ય કરવાનું અને આપણી કંઈ ભૂલ થતી હોય તો આપણે તપાસવાની અને ભવિષ્યમાં એવી ભૂલ ન કરીએ એનું આપણે ધ્યાન રાખવાનું.’

એમ કહીને સ્વામીશ્રીએ બધાને એટલા ઠંડા પાડી દીધા કે સૌનો ઉકળાટ શમી ગયો. ‘એને પાઠ ભણાવી દઈએ, કેસ કરી નાંખીએ, એને જેલમાં બેસાડી દઈએ’ એમ બોલનારા એ બધા શક્તિમાન પણ હતા, બધું જ થઈ શકે અને કરી શકે એવા હતા. પણ યોગીજી મહારાજે બધાને એકદમ ઠંડા કરી દીધા. એમને તો કોધ સ્પર્શી શકતો નહોતો, પરંતુ તેમના સાંનિધ્યમાં બીજાનો કોધનો આવેગ પણ શમી જતો હતો, એવું અનેક વખત પ્રત્યક્ષ જોયું છે. કોઈનો બદલો લેવો, એ વૃત્તિ જ લેશમાત્ર એમનામાં જોવા મળે નહીં. એમને કોઈ મોટપની પડી નહોતી, પોતાની પ્રતિષ્ઠા કે પોતાનું માન સચવાય એવી કોઈ ખેવના નહોતી. તેઓ પોતાને હંમેશાં ભગવાનના દાસ સમજતા હતા. એમને જ સર્વ કર્તા સમજતા હતા. એટલે એમને ક્યારેય કોધ, ઈર્ષ્યા, અધિકાર, અહંકાર વગેરેની જવાબા ક્યારેય સ્પર્શી શકતી નહોતી.

પોરબંદરની પાસે ગોરાણા નામનું ગામ છે. ત્યાંના રહેવાસી માલદેવભાઈ મેરને યોગીજી મહારાજનો ખરેખરો રંગ લાગી ગયો હતો. પૂર્વના એ સંસ્કારી મુમુક્ષુએ સાચા ગુરુની શોધ માટે બહુ પુરુષાર્થ કર્યો હતો. દક્ષિણમાં રમણ મહર્ષિને પણ મળેલા. અન્ય ઘણા મહાત્માઓ પાસે પણ ગયા હતા.

હરિદ્વાર, ઋષિકેશ અને બધા આશ્રમોની અંદર જ્યાં મોટા મહાત્માનું નામ સાંભળે ત્યાં દોડી જાય. પણ એમને શાંતિ થઈ નહોતી. પણ જામનગરમાં તેઓ જ્યાં નોકરી કરતા હતા, ત્યાં એમની સાથેના ભાઈઓએ યોગીજી મહારાજનો યોગ કરાવ્યો. ગોંડલમાં યોગીબાપાનાં પ્રથમ દર્શન કર્યાં અને શાંતિ શાંતિ થઈ ગઈ. તેઓ ખરેખરા ભક્ત થયા. પછી એમણે નક્કી કર્યું કે મારે ગામમાં યોગીજી મહારાજની પારાયણ કરાવવી છે. આ પારાયણ દરમ્યાન સંતોને ખ્યાલ આવ્યો કે બાજુમાં જ એક ગામમાં સંસ્કૃતની મોટી પાઠશાળા છે અને એક બહુ જ મોટા પ્રખર વિદ્વાન સંત ત્યાં ભારતના વિદ્યાર્થીઓને સંસ્કૃત ભણાવે છે. સમગ્ર ભારતમાં પાંચ-પચીસ મોટા વિદ્વાનોમાં એમની ગણના થાય એવા વેદાંત-ન્યાય-વ્યાકરણના પ્રકાંડ વિદ્વાન હતા. આવા મહાન વિદ્વાનની વાત સાંભળીને વિવેકસાગર સ્વામી અને અન્ય સંતો તેમને ખાસ મળવા ગયા. તેઓ તપસ્વી પણ એવા હતા. માત્ર કંતાન પહેરવાનું, સવાર-સાંજ ગાયનું દૂધ પીવાનું, બીજું કંઈ ખાવાપીવાનું નહીં. આટલી બધી વિદ્વતા સાથે આટલો બધો ત્યાગ-વૈરાગ્ય ! સંતો ખૂબ પ્રભાવિત થયા. એમણે બધો યોગીજી મહારાજનો મહિમા કહીને ગોરાણામાં પારાયણ પ્રસંગે સત્સંગનો લાભ આપવા ખાસ નિમંત્રણ આપ્યું.

નિમંત્રણનો સ્વીકાર કરીને તેઓ પારાયણમાં એક દિવસ સવારે પોતાના શિષ્ય મંડળ સાથે આવ્યા. એ નાનકડું એવું ગામ અને એક મકાનની નાની ઓસરીમાં પારાયણ ચાલતી હતી. એમાં એક બાજુ પારાયણની પાટ હતી ત્યાં સંત કથા કરતા હતા. બીજી બાજુ એક પાટ ઉપર યોગીજી મહારાજ બેઠા હતા. અન્ય બધા સંતો નીચે બેઠા હતા. આ મહાત્મા આવવાના હતા તેથી એમને માટે યોગીજી મહારાજની બાજુમાં પાટ મેલીને આસન કર્યું હતું. મહાત્મા આવ્યા, યોગીબાપાને મળ્યા, પછી તેમને આસન પર બેસવાની વિનંતી કરી : ‘વિરાજો, આપની માટે આસન તૈયાર છે.’ પણ તેઓ ઊભા જ રહ્યા, બેઠા જ નહીં. બધાને પ્રશ્ન થયો કે આપણે આગ્રહ કરીએ છીએ છતાં તેઓ કેમ બેસતા નથી ? બહુ આગ્રહ કર્યો ત્યારે તેઓ કહે, ‘હમ યહાં નહીં બૈઠેંગે. યે ગદી તો થોડી નીચી હૈ. હમ તો ઊંચી ગદી પર બૈઠેંગે. યોગીજી મહારાજ બૈઠે હૈ, વહાં પર હી હમ બૈઠેંગે.’ હવે બધાને મર્મ સમજાયો કે તેઓ કેમ અકળાય છે. હકીકતે એમને માટે લવાએલી પાટ માંડ એક બે ઈંચ નીચી હશે, અને તે પણ કોઈ ઈરાદાપૂર્વક નીચી રાખવામાં નહોતી આવી. સહેજે જ આમ બની ગયું હતું.

યોગીજી મહારાજે જિજ્ઞાસાથી પૂછ્યું કે, ‘મહાત્માજી શું કહે છે ?’

ત્યારે બધા સંતોએ સમજાવ્યું કે ‘બાપા ! મહાત્મા એવું કહે છે કે “આ ગાદી નીચી છે, ત્યાં હું નહીં બેસું.” આ યોગીજી મહારાજ બેઠા છે એ ગાદી ઊંચી છે ને ત્યાં હું બેસીશ.’

બાપા કહે, ‘લ્યો ! એમાં શું ! અમે ખસી જઈએ.’ અને ખસતાં ખસતાં તેઓ બાજુની ગાદીમાં આવી ગયા, મહાત્મા માટે જગ્યા કરી દીધી, પોતાનું આસન ખાલી કરી આપ્યું, મહાત્માને ત્યાં પ્રેમથી બેસાડ્યા, અને એમનું ખૂબ ભાવથી સ્વાગત કર્યું. પછી એમણે પ્રવચન કર્યું. લગભગ પોણો કલાક સંસ્કૃતમાં ખૂબ વિદ્વતાભરી વાતો એમણે કરી. પરંતુ કોઈને કંઈ આનંદ આવ્યો નહીં. આવો પ્રસંગ બન્યો છતાં યોગીજી મહારાજની આંખોમાં કે મુખારવિંદ પર સહેજ પણ કંટાળો કે અણગમો નહીં. એવો ને એવો જ પ્રેમ અને સદ્ભાવ. પોતાનાં સન્માન, આદર ને અનુરૂપ પોતાનું સ્ટેટસ કે પોતે ગુરુ છે માટે આવી જ ગાદી હોવી જોઈએ, એવું કશું એમના વિચાર માત્રમાં સંભવે નહીં. એટલે એમને ક્યારેય કોપની ચટકી પણ આવે નહીં.



રાજકોટમાં રહેતા વિદ્વાન લેખક મણિભાઈ સી. પારેખ ખ્રિસ્તી હતા, પરંતુ ઉચ્ચ કોટિના મુમુક્ષુ પણ હતા. એમણે વલ્લભાચાર્ય ઉપર, જિસસ ઉપર અને ભગવાન સ્વામિનારાયણ ઉપર પણ અંગ્રેજીમાં પુસ્તક લખ્યું છે. યોગીજી મહારાજ માટે એમને અનહદ સ્નેહ અને સદ્ભાવ. એમના ઘરે યોગીજી મહારાજ ઘણીવાર પધરામણીએ જતા. મણિભાઈ ઘણી વાર યોગીજી મહારાજના સ્વાનુભવની વાત કરતાં કહેતા કે ‘યોગીજી મહારાજ એટલે નમ્રતા અને સાદાઈની મૂર્તિ. યોગીજી મહારાજના જીવનમાં ગુરુપણાનો લેશ પણ ભાવ આપણને જોવા મળે નહિ. લાખો મનુષ્યો માને, ગુરુ તરીકે એમને પૂજે, પણ તેમને ગુરુપણાનો લેશ પણ ભાવ નહીં.’

યોગીજી મહારાજમાં સાંગોપાંગ નમ્રતા, પ્રેમ, દરેકનો આદર કરવો વગેરે સહજ હતું. કોઈ ગમે એટલું અપમાન કરે, ગમે તેટલો તિરસ્કાર કરે, કોઈ ગમે એટલો ક્રોધ કરે, કોઈ વ્યવસ્થા-અવ્યવસ્થા ઊભી થાય, ક્યારેક એમનું કહેલું કોઈએ ન સ્વીકાર્યું હોય, પણ એના તરફ યોગીજી મહારાજની દૃષ્ટિ જ ન હોય ! કારણ કે તેઓ અખંડ આત્મારૂપે વર્તતા હતા. ‘હું આત્મા છું, અક્ષર છું, બ્રહ્મ છું’ - એ એમની સાક્ષાત્કારની બાબત હતી. એમને માટે શબ્દ આકાશનો ભાગ હતો. વિજ્ઞાનદાસ સ્વામીએ એમને દુઃખ આપવામાં, તિરસ્કાર કરવામાં, હેરાન કરવામાં અને મારવામાં કંઈ બાકી રાખ્યું નથી. પણ એ સંદર્ભમાં યોગીજી મહારાજ કહેતા : ‘ગુરુ આપણને મારે તો મારવા દેવા, ગુરુ રાજી થાય ! ગુરુ આપણને મારીને રાજી થતા હોય તો આપણે માર ખાઈને સહન કરીને રાજી કરવા. એ આપણને માર મારે તો આપણે ખમવું. આપણે ખમીને રાજી થવું. ગુરુ આપણને ટોકે તો આપણે એ સહન કરવું, ગુરુની ટોકણી ખમીએ તો આપણે સત્સંગમાં વધીએ. મને તો વિજ્ઞાન સ્વામી ગમે તેટલું મારે, ગમે એટલું બોલે, ગાળો દે, મારે, આડો હાથ પણ ધરું નહિ. ગુરુને મારવા દઉં. જો મારીને રાજી થતા હોય તો એ રીતે રાજી થવા દઉં...!’

આટલી હદ સુધીના, એમની સાધુતાના ઉચ્ચ આચાર-વિચારો હતા. કદાચ શાસ્ત્રોમાં પણ ન મળે, એટલી બધી સરળતા, સાધુતા એમના જીવનમાં હતી. ક્રોધ તો લેશમાત્ર નહિ.



યોગીજી મહારાજના જીવનમાંથી આવું ઘણું બધું આપણે શીખવાનું છે. વાતવાતમાં ક્રોધ થઈ જાય, વાતવાતમાં આપણે કોઈનું અપમાન કરી નાખીએ, વાતવાતમાં આપણે કોઈને બે શબ્દો કહી દઈએ. કોઈકને મનમાં એમ પણ થાય કે ‘આવું જ કરવું જોઈએ, જો ન કરીએ તો બધા આપણને દેખાવે. કોઈ આપણને ગાંઠે નહિ, એટલે થોડો ફૂંકાડો તો રાખવો જ જોઈએ.’ એ સામાન્ય માણસની માન્યતા છે.

આ ક્રોધ આપણને આધ્યાત્મિક માર્ગમાં ખૂબ નડતો રહે છે. આપણે સત્સંગ કરીએ છીએ ત્યારે આપણને ક્રોધને ટાળવાની જડીબુટ્ટી મળી જ ગઈ છે. આધ્યાત્મિક વૃત્તિ રાખીને યોગીજી મહારાજ અને યોગીજી મહારાજના સ્વરૂપ સમા પ્રમુખસ્વામી મહારાજના સ્વરૂપમાં ચિત્ત જોડી દઈએ, એમના ગુણ ગ્રહણ કરીએ, તો આવા કંઈક સ્વભાવ ખરી પડે. પ્રમુખસ્વામી મહારાજના જીવનમાં પણ યોગીજી મહારાજની એ જ સ્વાભાવિકતાનું દર્શન થાય છે. એમનું

પણ અનંત વાર અપમાન થયું છે. એમણે હંમેશાં સહનશીલતા જ દાખવી છે. સાઠ સાઠ વર્ષથી તેઓ સહન કરતા આવ્યા છે. ક્યારેય કોઈનો લેશ પણ બદલો લેવાનો વિચાર પણ એમને આવ્યો નથી. કોઈના પણ માટે હલકો વિચાર સુદ્ધાં એમણે કર્યો નથી. આ સહનશક્તિ અને આ ધીરજ કેળવીને કોઈના ઉપર ક્રોધ ન કરવો એ બહુ મોટી સિદ્ધિ છે.

એક સત્સંગી આશ્રિત તરીકે યોગીજી મહારાજ અને પ્રમુખસ્વામી મહારાજના જીવનમાંથી આવી પ્રેરણા લઈએ, આપણે પણ આપણું જીવન એવું નિર્મળ અને સૌના પ્રત્યે પ્રેમસભર બનાવીએ, અને જીવન સાર્થક કરીએ એ જ પ્રાર્થના.

